इस्लाम के सैनिक

अल्लाह की तलवार और सूफ़ी-लोग

हिन्दू समाज तुम वास्तव में धन्य हो कि उनकी पूजा करते हो जिनका ध्येय ही तुमको जड़मूल से मिटाना था और धन्य हैं हिन्दू समाज के वे लाखों साधु संन्यासी, जगद्गुरु, भगवान, सद्गुरु और राजनीतिक नेता जो इन अनभिज्ञ लोगों को इस प्रकार की पूजा से विरत करने का कोई प्रयास नहीं करते। उल्टे उन्हें समझाते रहते हैं कि सभी धर्म समान हैं, सूफी संत भी हिन्दू संतों, ऋषियों के समान ही ईश्वर भक्त हैं। ऐसे समाज के नष्ट हो जाने में क्या सन्देह हो सकता है?

अपूज्याः यत्र पूज्यन्ते पूज्यानाम् च निरादरः।
त्रीणि तत्र प्रविशन्ति, दुर्भिक्षं, मरणं भयम्॥

जो उनकी पूजा करते हैं जो पूजा के योग्य नहीं हैं और उनका निरादर करते हैं जो पूजा के योग्य हैं, उनका तो अभाव और भयग्रस्त होना और मरना निश्चित ही है।

□ पुरुषोत्तम

सहयोग राशिः 15/-

विषय सूची

प्रस्तावना

यह पुस्तक ऐसे समय में प्रकाशित की जा रही है , जब आतंकवादियों ने अपहृत यात्री विमानों से अमेरिका पर आक्रमण करे उसके कुछ विश्व प्रसिद्ध प्रतिष्ठानों को पूरी तरह ध्वस्त कर दिया है । इस आक्रमण में अनेक देशों के हजारों नागरिक मारे गए । फलस्वरूप अमेरिका ने इस आक्रमण से त्रस्त होकर ऐसे कट्टरवादी आतंकवादियों को नष्ट करने का अभियान छेड दिया है । यह कहा जा रहा है कि इस्लाम आतंकवाद का पर्याय नहीं है और इस्लाम निर्दोष लोगों की हत्या नही सिखाता , किन्तु विश्व के प्रबुद्ध लोग यह मानते है कि ऐसे लगभग सभी आतंकवादी इस्लाम के अनुयायी ही हैं , वे विश्व में मानवता को चैन से नहीं बैठनें देंगे , तब तक सारा विश्व इस्लाम का अनुयायी नहीं हो जाएगा ।

इस पुस्तक में जो वर्णन विद्वान लेखक ने किया है , वह तथ्यों पर आधारित है , क्योंकि आवश्यकता के अनुसार समकालीन मुसलमान लेखकों के लेखन के सन्दर्भ भी दिए गए है ।

इस पुस्तक को अधिक से अधिक शान्ति प्रिय लोग पढें , यह बहुत आवश्यक है , जिससे भावी पीढ़ी यह जान सके कि मानवता के अस्तित्त्व को कैसे खतरे हैं और उन खतरों से कैसे बचा जा सकता है । हमारे मतानुसार खतरों से बचने का एक मार्ग यह भी है कि इतिहास के पन्नों पर सत्य लिखा जाए और असत्य पढने और पढाने से बचा जाए । इसी अपेक्षा से हम यह पुस्तक प्रकाशित कर रहे हैं ।

हमारा लक्ष्य भारत के संविधान के अनुच्छेद 51 में किए गए प्रावधान के अनुसार भारत की एकता , अखण्डता , और सम्प्रभुता के प्रति विद्यमान और भावी खतरों के प्रति जागरूकता पैदा करना है । विश्वास है कि हमारा यह प्रयत्न इस दिशा में साथ्रक सिद्ध होगा ।

विनीत

डा0 महेश चन्द्र
महामंत्री
सांस्कृतिक गौरव संस्थान

c

इस्लाम के सैनिक

मुस्लिम लीग के सालाना लाहौर अधिवेशन में भारतके साम्प्रदायिक विभाजन के में तर्क देते हुए जिन्नाह ने हिन्दू और मुसलमानों को अलग राष्ट्र मानने के जो कारण बिनाए थे उनमें एक कारण था (उन्हीं के शब्दों में) हिन्दू और मुसलमान इतिहास के दो भिन्न स्रोतों से अपनी प्रेरणा प्राप्त करते हैं । उनकी सैनिक गाथाएं भिन्न है । उनके सैनिक भिन्न है .... बहुधा एक का वीर दूसरे का शत्रु है । जिन्नाह के तर्कों को गांधी जी ने स्वीकार नहीं किया था । इस छोटी सी पुस्तिका को पढ़ने पर पाठको को यह समझनें मे देर नहीं लगेगी कि जिन्नाह सत्य बोल रहे थे और गांधी जी मत वास्तविकता से कोसो दूर थी । मुसलमानों के सैनिकों में (जिनमें से केवल पांच का उल्लेख इस लघु पुस्तिका में किया गया है । सभी वे लोग हैं जिन्होनें गैर इस्लामी मतों के उन्मलन और इस्लाम तथा शरियत राज्य की स्थानना के लिए मजहबी लड़ाइयां लड़ी और उसे जेहाद का नाम दिया। इसके विपरीत हिन्दू वीरों में एक भी व्यक्ति ढूंढे नहीं मिलेगा जिसने हिन्दू, बौद्ध , जैन अथवा सिख मत के विस्तार और अपने मत का शासन स्थापित करने का प्रयास किया हो । इनमें अधिकांश सांसारिक सुखों को त्यागने वाले और उसी की शिक्षा देने वाले साधू संत हैं । इस तथ्य को हिन्दू जितना शीघ्र स्वीकार कर लेंगे उतना ही शीघ्र भारत और कश्मीर में मुस्लिम समस्या की वास्तविकता को समझ सकेगे ।

प्रस्तुत पुस्तिका द्वारा लेखक ने पाठको के समक्ष भारत के मुस्लिम इतिहास के कुछ मुस्लिम सैनिकों के इन कृत्यों पर प्रकाश डाला है जिनके काण वे मुसलमानों द्वारा प्रशंसित है इनकी जीवनियां मुस्लिम बच्चों को प्रेरणा दे सके इसके लिए मुस्लिम मदरसों और स्कूलों में इन्हें पढ़ाने के लिए विशेष साहित्य का निर्माण किया जा जाता है । इन प्रशंसित मुसलमान सैनिकों के जीवन की मुख्य घटनाआऐं विवरण ढूंढना बहुत कठिन नहीं था । ये सभी एतिहासिक व्यक्ति है ताज पब्लिशिंग कम्पनी 3151 तुर्कमान गेट दिल्ली :– 110006 द्वारा मुस्लिम बच्चों के लिए हीरोज आफ इस्लाम सीरीज में प्रथम चार पर अलग अलग पुस्तके छापी गयी हैं जो आसानी से उपलब्ध हैं । लेख हैं प्रौफेसर फजल अहमद । हजरत खालिद बिन वालिद पर प्रस्तुत अंश उसी लेखक द्वारा लिखित इसी नाम की पुस्तिका से लिए गए हैं जो इरादा–इशआते–दीनियत हजरत निजामुद्दीन नई दिल्ली–11001 द्वारा प्रकाशित की गयी है । सामग्री ईलियट एंड डाउसन की 8 चरंणों में लिखी गयी पुस्तक हिस्ट्री आफ इंडिया बाई इट्स ओन हिस्टोरियन्स से ली गयी है । जिसका आधार मुस्लिम इतिहासकारों द्वारा लिखित ग्रन्थ हैं । ये सम्पूर्ण जीवनियाँ नहीं हैं । केवल उन्हीं घटनाओं का वर्णन किया गया है जिनकी विशिष्टता के कारण ये लोग मुसलमानों की प्रशंसा के पात्र है । प्रो0 फजल अहमद द्वारा लिखी पुस्तकों में से हमने पांच सैनिकों का चयन किया है । **1 – खालिद बिन वालिद , 2 – मौहम्मद बिन कासिम 3 – महमूद गजनी , 4– औरंगजेब , 5– टीपू सुल्तान ।**

प्रो0 अहमद इन पुस्तकों को लिखने का ध्येय इस प्रकार बताते हैं : छोटी–छोटी इन आत्म कथाओं को लिखने के दो मकसद हैं । (1) (मुस्लिम) लड़के–लड़कियों को उन आध्यात्मिक सम्पदाओं से परिचित कराना जिसके वे (भावी)संरक्षक हैं । (2) ऐसा सरल और मनोरंजक (बाल) साहित्य उपलब्ध कराना जो उनके मन में पश्चिमी विचारधारा से स्वतंत्र होकर अध्ययन के लिए प्रेम और योग्यता उत्पन्न करे ।

अनेक स्थानों पर प्रो0 फजल अहमद ने **अनैतिहासिक कहानियों** द्वारा यह दर्शाने का प्रयास किया है कि इन लोगों द्वारा लडे गए इस्लाम गके ये धर्म युद्ध सुरक्षात्मक युद्ध थे । परन्तु उन सैनिकों के चरि.त्र चित्रण के समय वह उनके इन युद्धों के मुख्य कारण मजहबी जुनून की अनदेखी नहीं कर सके । स्थान – स्थान पर हम इन मजहबी युद्धों के ध्येय का

इन सैनिकों द्वारा स्वयं की गयी घोषणाओं और वक्तव्यों के संदर्भ्र समंत मोटे अक्षरों लिखकर , पाठकों का ध्यान उनकी इस विशेषता की ओर आकर्षित करेंगे ।

इनके अतिरिक्त सूफियों के कियाकलापों को हमने एक अलग अध्याय में समाविष्ट कर दिया है । सूफियों की संख्या असीम है । इनमें से कुछ चुने हुए सूफियों का वर्णन पाठक यहां पढ़ सकेंगें । जो पाठक सूफियों के विषय में विस्तृत जानकारी प्राप्त करने इच्छुक हों इनको सययद अथर अब्बास रिजवी की 2 खण्ड पुस्तक हिस्ट्री आफ सूफिस्म इन इंडिया पढनी चाहिए ।

नोट – ध्यान देने योग्य बात यह है कि इन सैनिकों में गैर मुस्लिम देशों में इस्लाम धर्म के शांतिमय प्रचार करने वालों का एक भी नाम नहीं है । वास्तव में इन श्रेणी में जिन सूफियों का नाम लिया जाता हे इनमें कुछ तो सीधे–सीधे हिंसात्मक प्रयास में लग जाते थे । और दूसरे अनेक प्रकट और छद्म उपायों द्वारा मुस्लिम सुल्तानों के इस्लाम प्रसार में इनके सहभागी थे अथवा उनको हिन्दुओं के विरुद्ध उकसाने में सक्रिय थे । उनकी महानता उनके उन अनवरत प्रयासों में है जिनके कारण उनको गाजी , शहीद , काफिरकुश , बुतशिकन , कत्ताल , अल्लाह की तलवार जैसे शब्दों के साथ याद किया जाता है । इस प्रकार के लोगों को इस्लाम के हीरो बताकर गौरवमंडित करने वाले साहित्य का मुस्लिम बच्चों के कोमल मस्तिष्क पर क्या प्रभाव पड़ेगा यह बताने की आवश्यकता नहीं ।

तलवार के बल पर धर्मान्तरण :

हजरत खालिद बिन वालिद (अल्लाह की तलवार)

यद्यपि इस सैनिक का भारत से कोई सम्बन्ध नहीं है परन्तु भारत के इस्लामीकरण की प्रक्रिया में उनका महत्वपूर्ण स्थान इसलिए है कि उन्होंने भारत की सीमा पर स्थित बलवान पारसी राष्ट्र ईरान को विजय करउसके 100 प्रतिशत निवासियों को मुसलमान बना दिया । इस प्रकार भारत पर अरब मुस्लिम आक्रमण करने का मार्ग प्रशस्त कर दिया ।

प्रो0 फजल अहमद (लेखक – हीरोज आफ इस्लाम) इस सैनिक की महानता का वर्णन इस प्रकार करते हैं :

'' फारस (आधुनिक ईरान) के युद्ध में विरोध इतना भीषण था कि खालिद ने एक प्रण किया । आकाश की ओर देखते हुए उसने कहा : हे मालिक । यदि आज मुसलमान विजयी हुए तो मैं गैर मुसलमानों का वध उस समय तक करता रहूंगा जब तक कि पृथ्वी पर उनके रक्त की धारा न बह जाए ''।

मुसलमानों के साहस और (इस्लाम में) विश्वास के कारण अन्ततः मुसलमान विजयी हुए । खालिद ने अपने प्रण को साकार करते हुए उन गैर मुसलमानों (ईरानियों) के सिर काटने प्रारम्भ कर दिए जो भी उसके हाथ पड गए । किन्तु (रक्त के जम जाने से) पृथ्वी पर रक्त बहता नहीं था । जिसके कारण प्रण को पूरा करना सम्भव नहीं हो रहा था तब खालिद के मित्रों ने सुझाव दिया कि नहर के पानी को वध स्थल तक लाकर छोड दिया जाए जिससे रक्त की धारा बहने लगे और प्रण पूरा हो जाए । यही किया गया ।

असहाय गैर मुसलमानों के इस भीषण कत्ल आम का कारण ? वह इस्लाम स्वीकार करने को अथवा अपमानजनक जिजिया कर देने को तैयार नहीं थे । प्रो0 फजल अहमद लिखते है :

हरमज के नेतृत्त्व में अंबाला छावनी पर धावा बोलने से पहले खालिद ने हरमज को पत्र लिखा : यदि तुम इस्लाम ग्रहण कर लो तो हम तुम्हें कोई हानि नहीं पहुचाएंगें अथवा तुम जिजिया कर देना स्वीकार कर लो । ऐसी दशा में हम तुम्हारी रक्षा करेंगे । यदि तुम इन दोनों शर्तों को अस्वीकार करोगे तो तुम स्वयं की इसके फल भागने के जिम्मेदार होगे । तुमसे युद्ध करने के लिए मेरे साथ वे सैनिक हैं जो मृत्यु से उतना ही प्या र करतेहै जितना तुमजीवन से । (पृ0 62)

एक तीसरा पत्र यह है : तुम्हारे सुरक्षा का एक ही मार्ग है – इस्लाम ग्रहण करना । दूसरा मार्ग है जिजिया देना और हमारी छत्र छाया में आ जाना । जिजिया देना स्वीकार कर मुस्लिम छत्रछाया में आने का अर्थ क्या था यह सर जदुनाथ सरकार अपनी पुस्तक आरंगजेब में स्पष्ट करते हैं : कुरान कहती है : उनसे (गैर मुसलमानों से) लडों यहां तक कि वह अप्रतिष्ठित होकर अपने हाथ से जिजिया देने लगें । (कुरान 929)

इस दैवी आदेश के इंतिम दोश ाब्दों का अथ्र मुस्लिम मजहबी विद्वानों नपे यह लगाया है कि यह टैक्स इस प्रकार वसूला जाए जिससे टैक्स देने वाला अपमान का अनुभव करें । . ... इसका उपाय यह है कि जिम्मी (जिजिया टैक्स देने वाल) स्व्यं टैक्स देने आए। यदि वह हसिी व्यक्ति द्वज्ञराटैक्सभेजे तो लेने से इेकार कर दयिा जाए । जिम्मी पैदल चल कर आए (सवारी पर नहीं) खडे रहकर टैक्स अदा करे । टैक्स अकधकारीर उस समय बैठा रहे । टैक्स देने वाले का हाथ नीचे हो टझ्रेर अधिकरी का उवर ।

दूसरी बात सरकार **बताते हे कि जिजिया कर लगाने का नियम यह था कि वह दरिद्र लोगों पर सबसे अधिक था उनकी आमदनी का 6 प्रतिशत । मध्यम वर्ग**

पर उनसे कुछ कम था 6 से 1/4 प्रतिशत तक । मालदार लोगों पर 025 प्रतिशत अथवा उससे कम ।

प्रकटतः इसका उदेश्य था गरीब और मध्यम वर्गीय लोगों को इस कठोर आर्थि क भ्झार और यंत्रणा दायक बार–बार अपमान से बचने के लिए इस्लाम ग्रहण कर लेने के लिए मजबूर करना ।

इस प्रकार जिजिया कर गैर मुसलमानों , उनके परिवार और पूजा स्थलों की राज्य द्वारा सुरक्षा का साधन न होकर आर्थिक दवाब और अपमानजनक जीवन उस समय तक जीते रहने की रियायत थी जब तक वह इस्लाम स्वीकार न कर लें । निस्संदेह उसका यह मंतव्य पूरा भी होता था । मनुक्की तत्कालीन प्रत्यक्ष दर्शी लिखता है : अनेक किन्दू जो जिजिया देने में अक्षम हैं मुसलमान हो जाते हैं जिससे उन्हें टैक्स अधिकरायिों द्वारा निरन्तर अपमान से छुटकार मिल जाए .... ''.........................

'''औरंगजेब बहुत प्रसन्न है कि इस टैक्स के कायण हिन्दू प्रजा इस्लाम स्वीकार करने को बाध्य हो जाएगी । (स्टोरिया 2 234 , 4 117)

(मौहम्मद बिन कासिम)

फौजी इस्लाम की प्रथम हिन्दू भारत पर विजय :

इस्लाम के पैगम्बन मौहम्मद की मृम्यु सन 632 ई0 में हो गयी थी , 634 ई0 में खलीफा उमर ने उस्मान (अब्दु असी का पुत्र) को बहरीन एवं यमन का गवर्नर नियुक्त किया । उस्मान ने बिना खलीफा से पूछे एक सेना भारत में सिंध प्रदेश पर आक्रमण के लिए भेज दी । किन्तु किसी कारण वश जिसका इतिहास में वर्णन नहीं है वह सेना बिना युद्ध किए लौट गयी । खलीफा को जब पता चला तो वह बहुत खफा हुआ । उसने उस्मान को मनमानी करने के लिए बहुत प्रताड़ित किया और कहा कि खुदा की कसम यदि हमारी सेना के कुछ लोग युद्ध में मारे जाते तो मैंने तुम्हारे वंश के उतने ही आदमी कत्ल करा दिए होते ।

इसके पश्चात जब उस्मान (अफ्फन के पुत्र) खलीफा हुए उन्होंनें हाकिम (जहल्ला का पुत्र) को भारत की टोह लने भेजा जिससे आक्रमण की योजना बनाई जा सके ।

हाकिम ने लौटकर खलीफा को को बताया : '' पानी की बहुत तंगी है । फल घटिया किस्म के पैदा होंते हैं । रास्ते में डाकू बहुत शक्तिशाली हैं यदि थोडी सेना भेजी जाएगी तो कत्ल कर दी जाएगी। यदि भारी सेना भेजी जाएगी तो भूखों मर जाएगी । खलीफा नें आक्रमण का संकल्प त्याग दिया।

659 ई0 में **अली (अबू तालिब के पुत्र) खलीफा हुए तो उनकी अनुमति से हारस (मुर्रा – अल – आब्दी का पुत्र) की कमान में एक सेना सिंध की ओर रवाना हुई । प्रारम्भ में इस सेना को कुछ सफलता मिली और उसने एक सहस्र लोगों को पकड कर गुलाम बना लिया । किन्तु शीघ्र ही अचानक आकमण से हतप्रभ हिन्दू संगठित हो गए और उल्टा मुस्लिम सेना पर आकमण कर दिया । 662 ई0 तक तमाम मुस्लिम सेना अपने सेनापति हारस सहित सिंध की सीमा के पास कीकन नामक स्थान पर मार डाली गयी । कोई भी शेष नहीं बचा।**

सन 664 में जब मुवैया खलीफा बना तो मुहल्लब (अबूसफरा का पुत्र) के नेतृत्त्व में फिर सिंध पर आकमण हुआ तथा वह लाहौर तक घुस आया कितु इसके तुरन्त पश्चात हिन्दुओं ने इस पूरी सेना को नष्ट कर दिया ।

इसके पश्चात बड़ी तैयारी के साथ सिनान (सलमा का पुत्र) की कमान में खलीफा मुवैया के समय में ही एक विशाल मुस्लिम सेना ने आक्रमण किया । मकरान का पतन हो गया । वहां पर मुस्लिम राज्य स्थापित हो गया।

तब एक दूसरी विशाल सेना के साथ र**शीद नामक सेनानायक ने सिंधु विजय के लिए प्रयाण किया ।** मकरान को अपनी मुख्य छावनी बनाकर वह कीकन तक चढ आया । किन्मु वहां **मेढ हिन्दुओं के साथ युद्ध में मारा गया । सिंध अजेय रहा ।** रशीद की घोर विफलताके पश्चात एक बार फिर सिनान ने विशाल सेना लेकर सिंध पर आक्रमण किया । किन्तु सारी मुसलमान सेना नष्ट हो गयी । इसके पश्चात **अलमंजर ने सिंध पर आक्रमण किया । कुछ लूटपाट की किन्तु अंत में उसकी कब्र भी सिंध की सीमा के बाहर ही बनी ।**

अब इब्न हर्राह अल बहाव की बारी भी । उसकी विफलता के बाद मज्जा आया सभी सिंध की सीमा पर ही मार डाले गए । सिंध की सीमा मानों मुसलमानों का एक विशाल कब्रिस्तान बन गयी ।

इसी बीच युसुफ का पुत्र अल हज्जाज ईराक गवर्नर बना । जब वालिद खलीफा बना तो हज्जाज ने मौहम्मद – बिन – कासिम नामक 17 वर्ष के एक युवक को सेनापति बनाकर सिंध पर आक्रमण करने के लिए भेजा । उसे सीरिया के चुने हुए 6000 घुड़सवार सैनिक दिए गए । एक विशाल सेना भी उसके साथ थी , 712 ई0 में 17 वर्ष के इस युवक द्वारा 80 वर्ष तक निरन्तर युद्धरत अजेय रहे सिंध का पतन हुआ ।

मौहम्मद बिन कासिम नामक यह 17 वर्ष का युवक इस्लाम के सैनिकों में क्यों अग्रणी गिना जाता है ? इसका आभास हमें सेवा निवृत्त पाकिस्तानी एयर मार्शल मौहम्मद असगर खाँ की पुस्तक ''द फर्स्ट राउंड : इंडो पाकिस्तानी वार 1965 '' से मिलता है । वह लिखता है : '' (भारत के इस्लामी करण के लिए) लड़े गए युद्धों में पहला युद्ध देवल (आधुनिक करांची) का युद्ध था । इसमं मौहम्मद बिन कासिम की विजय के फलस्वरूप मुसलमानों के सिंध में मजबूती से पैर जम गए और भारत में (इस्लाम के) प्रवेश द्वारा खुल गए । '' '' मुसलमानों द्वारा देवल (कराची) का नामकरण हुआ '' बाबुल इस्लाम '' इस्लाम का प्रवेश द्वार '' (फ0 ए0 ' बिन कासिम ')

प्रो0 फजल अहमद ने भी मौ0 असगर खाँ की बात का अनुमोदन करते हुए लिखा है : ' आज 1200 वर्षों के बाद भी न केवल हम पाकिस्तानी अपितु विश्व के सभी मुस्लिम मौहम्मद बिन कासिम पर गर्व करते हैं । वह पहला व्यक्ति था जो इस्लाम का प्रकाश लेकर भारत आया । इस प्रकार हम उसे पाकिस्तान का पहला निर्माता कह सकते हैं । ''

'' फजल अहमद , हज्जाज और मौहम्मद बिन कासिम के हिन्दुओं के प्रति पंथनिरपेक्ष दयालु और न्यायपूर्ण व्यवहार के गुण गाते नहीं थकते । उसे मंदिरों की मरम्मत करने वाला बताते हैं परन्तु चाच नामक तत्कालीन मुस्लम लेखक कुछ और ही बताता है ं उसके अनुसार मौहम्मद बिन कासिम ने हज्जाज को पत्र लिखा : '' सिविस्तान और नीरुन के दुर्ग छीने जा चुके है। दाहिर का भतीजा , उसके प्रधान अफसर और सैनिक मार दिए गए हैं । काफिरों को या तो मुसलमान बना लिया गया है अथवा उन्हें तलवार के घाट उतार दिया गया है ं मूर्ति मंदिरों के स्थान पर मस्जिदें बना दी गयी हैं । अजान दी जाती है । पाँचों वक्त नमाज पढ़ी जाती है। ''

हज्जाज ने उत्तर दिया : ' ओह मेरे चचेरे भाई .... अल्लाह कहता है काफिरों को शरण मत दों अपितु उनके गले काटो । '

हज्जाज के द्वारा अल्लाह का आदेश मौहम्मद बिन कासिम तक पहुँच गया । अगली विजय पर उसने समस्त शस्त्रधारियों को कत्ल करवा दिया जिनकी संख्या इतिहासकार बताता है कि कुछ के अनुसार 6000 थी और के अनुसार 16000 थी । इस बार 20000 गुलाम पकड़े गए , 4000 कासिम के हिस्से में आए और 16000 सिपाहियों में बांट दिए गए । ''

इसी इतिहासकार के अनुसार जिन्होंने इस्लाम ग्रहण कर लिया वे गुलामी और टैक्स (जिजिया)से मुक्त कर दिए गए । शेष सभी गैर–मुस्लिमों पर इस्लाम के अनुसार जिजिया कर लगाा दिया गया ।

दूसरा नरसंहार असकंद में हुआ । मौहम्मद – बिन कासिम विजय के पश्चात दुर्ग में आ गया । **उसने 4000 शस्त्रधारी युद्ध बंदियों को तलवार के घाट उतार दिया और उनके परिवारों गुलाम बना दिया । मुल्तान में भी इसी प्रकार 6000 युद्धबन्दी कत्ल कर दिए गए । उनके सभी रिश्तेदार और परिवार के लोग गुलाम बना दिए गए । इस नरसंहार के आतंक और अपमान तथा भारी जिजिया न दे सकने के कारएा कितने लोग (स्वेच्छा से ?) मुसलमान हो गए होंगे , इसकी केवल कल्पना ही की जा सकती है ।**

इसी इतिहासकार के अनुसार एक मुल्ला घोषणा करता है '' कुफ्र समाप्त प्रायः हो गया है । मन्दिर ध्वस्त कर दिए गए हैं और उनके स्थान पर मस्जिदें बनने लगी हैं । ''
कैसा चरित्र था मौहम्मद बिन कासिम का ? क्या किया उसने विजयोपरान्त भारत में ?
निस्संदेह 17 वर्ष के एक युवक के लिए सिंध विजय एक बड़ी उपलब्धि थी । उसके हिन्दू प्रतिद्वन्दी दाहिर का नैतिक पतन कितना ही उसकी हार का कारएा क्यो न बना हो अजेय सिंध के विरुद्ध आक्रमण करने और उसन विजय करनें में उसने जिस साहस और युद्ध कौशल का परिचय दिया उसकी प्रशंसा होनी स्वाभाविक है । परन्तु साहस और युद्ध कौशल के साथ जिस क्रूरता और आतंक का परिचय हममें उसके धार्मिक जुनून में मिलता है उसके होते हुए प्रों0 फजल अहमद जैसे लोगों द्वारा उसको इस्लाम का हीरो (सैनिक) उद्घोषित करने से और मुस्लिम बच्चों के समक्ष उसके इस चरित्र को अनुकरणीय बनाकर पेश करने से कुछ मुसलमानों के इस दावे की प्रामाणिकता की कि '' इस्लाम का अर्थ शान्ति है '' और वह शान्ति की कामना करता है नष्ट हो जाती है ।

महमूद गजनवी

बहुत से हिन्दू विद्वान , विशेष रूप से कम्युनिष्ट अपने को और दूसरे हिन्दुओं को यह कह कर धोखा देते है कि भारत पर विदेशी आक्रमणकारी मुसलमान धन और सुंदर स्त्रियों के लालच से यहाँ आए थे । उनका आचरण इस्लाम के विरुद्ध था । उनके इस प्रकार के कृत्यों इजाजत इस्लाम नहीं देता । परन्तु हमें एक भी मुस्लिम मजहबी विद्वान इस प्रकार का बात कहते नहीं मिलता । इसलिए हम प्रो0 फजल अहमद द्वारा महमूद गजनवी को इस्लाम का हीरो स्वीकार करने में उनसे पूर्णतया सहमत हैं । मुस्लिम मजहबी विद्वानों द्वारा लिखी गयी कुरान और हदीस के हिन्दी अथवा अग्रेंजी अनुवादों और उनकी व्याख्याओं और उनके विश्स इतिहास का अध्ययन करने के पश्चात हमारा निश्चित मत है कि मौहम्मद बिन कासिम , खालिद बिन वालिद , महमूद गजनवी , औरंगजेब , टीपू सुल्तान और उन जैसे दूसरे मुस्लिम आक्रमणकारी और शासक जिन्होंने इस्लाम स्वीकार न करने वाले हिन्दुओं का वध

किया ,उन्हें गुलाम बनाया और उनके पूजा गृहों को नष्ट किया इस्लाम के गूढ़ विद्वान , मजहब निष्ठ मुसलमान थे । उनका मुख्य ध्येय भारत से मूर्ति पूजा जैसे घृणित धर्मों को जड़ से मिटा कर यहाँ के प्रत्येक व्यक्ति को मुसलमान बनाना और यहाँ कुरान पर आधारित शरीयत कानून का शासन स्थापित करना था । इस ध्येय की पूर्ति के लिए सत्ता प्राप्त करना एक आवश्यक साधन था । ध्येय नहीं था । सत्ता प्राप्ति के लिए अरब , पठान , मुगल , गुलाम एक दूसरे से लड़ रहे थे । वे एक दूसरे के घोर विरोधी , शत्रु और राजनीतिक प्रतिद्वन्दी थे । वे स्वयं कुछ समय पहले तक मूर्ति पूजक , बौद्ध , हिन्दू , पारसी (अग्नि पूजक) थे परन्तु अब उन सबका एक ही ध्येय था सभी गैर– इस्लामी मतों का उन्मूलन और उन झूठे मतों के अनुयायियों को मुसलमान बनाना अथवा नष्ट कर देना , गैर मुस्लिम भारत में शरीयत का शासन स्थापित करना ।

महमूद गजनवी , गजनी का निवासी था । उसका पिता सुबुक्तगीन मुस्लिम आक्रमणकारियों द्वारा बलात मुसलमान बनाए गए किसी गैर मुस्लिम परिवार का पुत्र था जिसे 12 वर्ष की आयु में 954 ई0 मे मध्य ऐशिया की किसी गुलाम मंडी मं हाजी नस्र नामक व्यक्ति के हाथ बेचा गया था । (इन मंडियों का वर्णन पढ़िए – लेखक की पुस्तक ' भारतीय मुसलमानों के हिन्दू पूर्वज)

हाजी नस्र ने उसे मुसलमान बना कर मजहबी और युद्ध शिक्षा में पारंगत कर दिया , 17 वर्ष की आयु में बुखारा में उसे गजनी के सुल्तान अल्पतगीन के किसी दरबारी के हाथों बेच दिया गया । सुल्तान ने इसे होनहार समझ कर अपने दरबारी से खरीद लिया । तीन बार गुलामी में बेचा गया किसी अज्ञात बौद्ध (?) परिवार का बलपूर्वक मुस्लिम गुलाम बनाया गया यह सुबुक्तगीन ही महमूद गजनवी का पिता था । जब महमूद 6 वर्ष का था तो सुबुक्तगीन अल्पतगीन के वंशजों से गददी छीन कर गजनी के सिंहासन पर बैठा ।

प्रो0 फजल अहमद ने लिखा है कि सुबुक्तगीन ने जो कि सुल्तान बनने से पहले भी एक धनवान और प्रतिष्ठित प्रधानमंत्री था अपने पुत्र महमूद को शिक्षित करने में कोई कसर नहीं छोड़ी । **विख्यात विद्वानों द्वारा उसको शिक्षा दिलाई गयी , शीघ्र ही उसने कुरान कंठस्थ कर ली और इस्लाम के मजहबी सााहित्य का अध्ययन कर डाला ।**

तारीखे – यामिनी के लेखक अल – उतबी (ई0 डा0 2 / 24) ने लिखा है कि खलीफा से खिलअत मिलने के पश्चात सुत्तान महमूद ने शपथ ली कि वह प्रति वर्ष हिन्द पर जिहाद (मजहबी युद्ध) बोलेगा।

क्या हुआ भारत के हिन्दुओं के साथ –

सन 1000 ई0 में पहला आक्रमण हुआ , 250000 दीनार राजा जयपाल से लिए गए । 1004 ई 0 में फिर आक्रमण किया गया । **वहाँ के लोंगों को अपने साथ लाते हुए मुल्लाओं ने मुसलमान बनाया** , 1008 ई 0 में कोट कांगड़ा विजय हुआ । 700000000 (सात करोड़) दिरहम सिक्कों में और 700400 मन सोना लूट में मिला । सन 1011 मं थानेसर का पतन हुआ । **वहाँ तमाम मन्दिर ध्वस्त कर दिए गए और मूर्तियाँ तोड़ डाली गयी ।** चक्रस्वामी की मुख्य प्रतिमा गजनी ले जाई गयी और अपवित्र करके चौराहे पर डाल दी गयी । महमूद का सचित इतिहासकार उतबी " तारीखे यामिनी ' में लिखता है : " नदी काफिरों के खून से सुर्ख हो गया । सुल्मान इतना धन लेकर लौटा कि उसको गिनना कठिन है । अल्लाह इस्लाम और मुसलमानों को जो सम्मान अदा करता है उसके लिए उसका धन्यवाद । "

1013 ई 0 में गजनवी ने नंदना पर आक्रमण किया । मन्दिर ध्वस्त कर दिए । बेकसूर नागरिकों का वध किया गया । उतवी ने लिखा है : ' सुल्तान अथाह सम्पत्ति

लेकर लौटा गुलामों की संख्या इतनी थी कि उनका बाजार भाव गिर गया और उच्च घरानों के लोगों साधारण दुकानदारों की सेवा करनी पड़ी । किन्तु यह तो अल्लाह की मेहरबानी है जो अपने मजहब को सम्मान देता है और कुफ्र को अपमानित करता है । '

1016 ई 0 में गजनवी ने यमुना पार की और बुलंदशहर के बरन नामी नगर से 1000000 दिरहम वसूले । वहाँ से वह मथुरा जिले में मधुवल गया । उतबी ने उसके आतंक के विषय में लिख हे : '' **काफिर किले छोड़कर भाग गए । उफनी हुई नदी को पार करने के प्रयास में अनेक डूब गए । किन्तु बहुत से कत्ल कर दिए गए , गिरफ्तार किए गए या डूब गए ....लगभग 50000 आदमी मारे गए । '**

अब मथुरा की बारी थी । वहाँ 89300 मिस्कल वजन की पाँच सोने के मूर्तियाँ और 200 चांदी मूर्तियाँ उनके हाथ आईं । उतबी के अनुसार

'' सुल्तान ने आदेश दिया कि सभी मंदिरों को नेपथा से आग लगा दी जाए और फिर पृथ्वी तक ध्वस्त कर दिए जाएं , 20 दिन तक शहर को लूटा जाता रहा । '' आक्रमणकारियों का दूसरे नगरों में नागरिकों के साथ व्यवहार देखकर सहज ही अनुमान किया जा सकता है कि मथुरा में इन बीस दिनों में हिन्दुओं पर क्या अत्याचार नहीं हुए होंगे ।

इसके पश्चात उसने कन्नौज का रास्ता पकड़ा। उतबी के शब्दों में कन्नौज के पतन का चित्र : **'' कन्नौज में 10000 मन्दिर थे । उनकी गूंगी बहरी मूर्तियों का जो हाल आकान्ताओं ने किया , उसको देखकर अधिकतर निवासी नगर छोड़कर भाग गए । जो हाथ पड़ गए वे कत्ल कर दिए गए ।** सुत्तान ने अपने फौजियों को लूटने और बंदी बनाने की खुली छूट दे दी । उतबी के अनुसार '' **मुंज और असी ''में यही कहानी दोहरायी गयी । शरवा का भी यही हाल हूआ । ''** इतिहासकार बताता है : '' मुसलमानों ने लूट की और उस समय तक कोई ध्यान नहीं दिया जब तक उनका मन सूर्य और अग्नि पूजक काफिरों को कत्ल करते करते भर नहीं गया । फिर अल्लाह के मित्रों ने वध किए गए लोगों की तलाश ली । लगभग तीन लाख दिरहम का माल हाथ लगा । **युद्धबन्दियों की संख्या का अनुमान इससे लगाया जा सकता है कि एक गुलाम दो से दस दिरहम मूल्य तक बिक गया । मवारीन नहर , ईराक और खुरासान तक के बाजार उन लोगों से भर गए जो गुलाम खरीदने आए थें गोरे , काले , गरीब और अमीर सब गुलामी की जंजीरों में एक साथ बंध गए । ''**

अब **सोमनाथ** की बारी थी । जकरिया अल काजवानी नामक मुस्लिम इतिहासकार ने अपनी पुस्तक ' आसारुल बिलाद ' में लिखा है कि ' सितम्बर सन 1025 ई 0 में सोमनाथ का पतन हुआ। **लगभग 50000 से भी अधिक व्यक्ति जो वहाँ माजूद थे कत्ल कर दिए गए ।** 20000000 दो करोड़ दीनार मूल्य की सम्पत्ति लूट ली गयी **। मन्दिर ध्वस्त कर दिया गया ससोमनाथ की मुख्य मूर्ति के टुकड़े टुकड़े कर दिए गए और उसको जामा मस्लिद की सीढ़ियों में लमाने लिए गजनी भेज दिया गया जिससे वह सदैव मुसलमानों के पैरों मल रौंदी जाती रहे । ''**

औरंगजेब

भारत पर शासन करने वाले सैकड़ों मुसलमान सुल्तानों और बादशाहों में कदाचित कोई भी दूसरा व्यक्ति भारतीय मुसलमानों की दृष्टि में इतना प्रशंसित और सम्मानित नहीं है जितना औरंगजेब । प्रो0 फजल अहमद ने कहा है : बचपन से ही औरेगजेब का हृदय इस्लाम की शिक्षाओं से परिपूर्ण हो गया था । युवावस्था में उसने अपने जीवन का एक ही

ध्येय बना लिया : इस्लाम की शिक्षाओं के अनुरूप अपने को ढालना । अपने दृढ़ निश्चय से कोई भी कारण उसे डिगा नहीं सका । (हीरोज आफ इस्लाम सीरीज : मौहिनुददीन आलमगीर औरगजेब । पृ0 19)'

लखनउ मदरसे के रैक्टर अली मियाँ जहाँ औरंगजेब की प्रशंसा के पुल बाँधते नहीं थकते वहीं अकबर से अपनी घृणा को भी छुपा नहीं पातें । ' लगता था कि **अकबर जैसे शक्तिशाली बादशाह ने इस्लाम सिद्धान्तों के नितांत विपरीत** इस उपमहाद्वीप को बहुदेवतावाद के कीचड़ में डुबोने का निश्चय कर लिया था । जबकि यहाँ चार सौ वर्ष तक इस्लाम का सुखदायी शासन रह चुका था ।...................... परंतु अकबर का प्रत्येक भावी वंशज एक से एक बढ़कर निकला । और फिर **इस देश के सिंहासन पर आया औरंगजेब जिसका शासन काल इस्लाम के इतिहास और पुनर्जागरण में सबसे अधिक शानदार अध्याय है ।** (द न्यू मीनेस एंड इटस आन्स्र 21) ''

औरगंजेब का चरित्र

निस्संदेह औरंगजेब एक कट्टर इस्लामी शासक था । वह शराब नहीं पीता था । जो अनेक शासकों की कमजोरी थी । उसकी एक ही बेगम थी वह नियम पूर्वक नमाज पढ़ता था और रोजे रखताा था । घोर युद्ध में भी वह अजान सुनकर बिना जान की परवाह किए हाथी उतर कर नमाज पढ़ने बैठ जाता था । विश्व के इहिास में कदाचित अपने मजहब की निष्ठापूर्वक पाबंदी करने वाला कोई दूसरा शासक ढूंढना असम्भव लगता है ं परन्तु जहाँ इस्र्लाम के इन आध्यात्मिक नियमों का पालन वह कठोरता से करता था वहीं वह इस्लाम के सामाजिक और राजनीतिक आदेशों का पालन भी कठोरता से करता था इसीलिए काफिर हिन्दुओं के मंदिरों और पुस्तकालयों का ध्वस्तीकरण, उनके त्योहारों पर प्रतिबन्ध ,उनको मुसलमान बनाने के लिए जिजिया इत्यादि विविध आर्थिक दबाव का भी प्रयोग उसने उसी धार्मिक उन्माद के साथ किया । उसीलिए औरंगजेब भारतीय मुसलमानों में एक आदर्श इस्लामी शासम समझा जाता है

इपने शासन के प्रथम वर्ष में ही उसने संकल्प किया **इस्लाम नए मंदिरों निर्माण की अनुमति नहीं देता ,** 1664 ई 0 में जब वह गुजरात में वाइसराय था उसने अहमदाबाद में नवनिर्मित चिंतामणि नामक हिन्दू मंदिर को अपवित्र करने के लिए वहाँ गाय का वध करवाया और उसके बाद उसको मस्जिद में परिवर्तित कर दिया गया ....
उसका एक आदेश जो अभी मूल रूप में उपलब्ध है उसके शासन काल में प्रारंभ में जारी किया गया था । उसके द्वारा स्थानीय मुसलमान अफसरों को कटक से मेदिनीपुर तक उड़ीसा के प्रत्येक गाँव तथा नगर में **पिछले 10 – 12 वर्षों में निर्मित सभी मंदिरों को चाहे वह एक झोपड़ी की क्यों न हो ध्वस्त करने और पुराने मंदिरों की मरम्मत प्रतिबंधित करने के आदेश दिए गए है।**

अपने शासन के 12 वें वर्ष में 9 अप्रैल 1669 ई0 को उसने एक सार्वजनिक आदेश जारी किया : **काफिर हिन्दुओं के सभी स्कूल और मन्दिर ध्वस्त कर दिए जाएं और हिन्दू धर्म की शिक्षा न दी जाए ं।**

अब हिन्दुओं के अति सम्मानित पूजा स्थलों की बारी थी : गुजरात का सोमनाथ मंदिर , काशी का विश्वनाथ मंदिर और मथुरा केशवराय मंदिर .... सूबों के गवर्नर चैन से नहीं बैठ सकते थे तब तक कि वह बादशाह को यह प्रमाणपत्र न भेजें कि (मंदिरों , स्कूलों के ध्वस्त करने के) उसके आदेशों का पूर्ण रूप से पालन किया जा चुका है । (सर जदुनाथ सरकार : हिस्ट्री आफ औरंगजेब , पृ0 174 – 175)

10 अप्रैल 1665 को एक आदेश जारी किया गया । विक्रय के लिए लाए गए सभी सामान पर सरकारी बिक्रीकर **ढाई प्रतिशत मुसलमान विकेताओं के लिए और पाँच प्रतिशत हिन्दू विकेताओं के लिए निर्धारित किया गया ।**

इस्लाम के प्रसार के लिए एक और मार्ग अपनाया गया । **मुसलमान बनने पर सरकारी नौकरी और शासन द्वारा पारितोषिक का लालच दिया गया । हिन्दुओं को शासक का मत अपनाने पर नकद रुपया , भत्ता , उत्तम वस्त्र , जेल से रिहाई और पैत्तृक सम्पत्ति पर अधिकार रिश्वत के रूप में दिए जाते थे।**

' मुसलमान बन जाओं , कानूनगो बन जाओ '' एक प्रचलित कहावत बन गयी थी (पूर्वांद्धृत , पृ0 180. 181) , 1668 में औरंगजेब ने हिन्दू मेले भी प्रतिबंधित कर दिए । (पूर्वांदधृत , पृ0 180. 183)

कुछ छद्म धर्मनिरपेक्ष विद्वान औरंगजेब द्वारा हिन्दू मंदिरों अथवा मठाधीशों को दिए गए एक दो दान पत्रों को उदधृत करके इस बादशाह की पंथ निरपेक्षता को सिद्ध करने के प्रयास करते हैं किसी भी शासक के लिए अपने विरोधियों में से कुछ लोगों को अपने पक्ष में रखने के लिए इस प्रकार के हथकंडे अपनाने पड़ते हैं । अंग्रेजी शासन में रायबहादुरां, खान बहादुरों और सरदार बहादुरों की कोई कमी नहीं थी । औरंगजेब की महानता का बखान इन दानपत्र.ों के कारण किसी मुस्लिम इतिहासकारों ने नहीं किया है। किया है तो केवल उसकी घोर हिन्दू विरोधी नीतियों के कारण ।

(टीपू सुल्तान)

मालाबार में मुस्लिम मोपला विद्रोह के समय उस क्षेत्र में अल्पसंख्यक हिन्दुओं को तलवार और कुरान में से एक को स्वीकार करने के लिए विवश किया गया थाा । अपनी जान बचाने के लिए 5000 हिन्दुओं ने इस्लाम ग्रहण किया । जिन्होंने इंकार कर दिया उनके सिर काट डाले गए । इस घटना पर कुख्यात कांग्रेसी नेता हसरत मोहानी ने कहा था : '' हिन्दुओं को इस्लाम और तलवार में से एक को चुनने को कहा गया था । यदि उन्होंने इस्लाम को चुन लिया तो यह तो स्वेच्छा से इस्लाम ग्रहण करना कहा जाएगा । ' (लिबरेटर : 26–08–1926 तथा एडवर्ड मार्टिमर : फेथ एंड पावर पृ0 196)

पूर्वोदधृत प्रों0 फजल अहमद की मुस्लिम बच्चों के लिए लिखी पुस्तक टीपू सुल्तान ' में इसी प्रकार बलात धर्मान्तरण को खुशी खुशी इस्लाम ग्रहण करना बताकर टीपू सुल्तान को एक दयालु प्रजावत्सल , पंथनिरपेक्ष और इस्लाम का शांति–पूर्व ढंग से प्रचार प्रसार करने वाल शासक सिद्ध करने का असफल प्रयास किया गया है ।

कुर्ग के युद्ध में टीपू द्वारा बन्दी बनाए गए हिन्दुओं के विषय में प्रो0 फजल अहमद ने लिखा है : ' सब विद्रोहियों को अब इस्लाम ग्रहण करने को कहा गया । इस्लाम की खूबियाँ उनको समझाई गयी ं। कुछ देर सोचने के पश्चात वे **खुशी ख़ुशी इस्लाम ग्रहण करने को तैयार हो गए । उन्हें मुसलामन बना लिया गया । '**

प्रों0 फजल अहमद खूब जानते हैं कि इन हिन्दू युद्ध बंदियों को खुशी खुशी इस्लाम ग्रहण करने से इंकार का अर्थ क्रूरता पूर्वक मृत्यु दंड । इसलिए इसे खुशी खुशी इस्लाम ग्रहण बताना हसरत मोहानी के स्वेच्छा से इस्लाम ग्रहण करने की भाँति लज्जाजनक और हास्यास्पद है ं

एच 0 डी 0 शर्मा की पुस्तक '' द रीयल टीपू '' , प्रकाशक ऋषि पब्लिकेशन्स 76 – चन्द्रिका कालोनी , वाराणसी में उद्धृत सरदार पणिक्कर द्वारा इंडिया आफिस लंदन में उपलबध टीपू के मूल पत्रों से टीपू का क्रूर रूप स्पष्ट हो जाता है ।

22 मार्च 1788 को टीपू द्वारा अब्दुल कादिर को लिखे गए पत्र में ' 1200 से अधिक हिन्दुओं को मुसलमान बना लिया गया हे । उनके अनेक नम्बूदरी पंडित हैं इस समाचार का हिन्दाओं में भी खूब प्रचार किया जाए । स्थानीय हिन्दू तुम्हारे सामने पेश किए जाएं और तब उन्हें मुसलमान बना लिया जाए । किसी भी नम्बूद्री को छोड़ न जाए । उनको उस समय तक बन्दी रखा जाए जब तक कि उनके लिए बनवाए गए (मुस्लिम) वस्त्र तुम्हारे पास न पहुँच जाएं । 14 दिसम्बर 1788 को टीपू द्वारा कालीकट स्थित अपनी सेना के कमांडर को : ''' मीर हसन अली के साथ मैं अपने दो अनुचरों को भेज रहा हूँ । उनके साथ जाकर तुम तमाम हिन्दुओं को पकड़कर मार डालों । जो 20 वर्ष की आयु से कम हैं उन्हें कारागार मे बंद कर दो और शेष में से 5000 को पेड़ों से लटका कर मार डालो । यह मेरा आदेश है ।

21 दिसम्बर 1788 को टीपू द्वारा शेख कुतुब को लिखे गए पत्रसे : तुम्हारे पास 242 नायर बंदियों को धर्माण्तरण के लिए भेजा जा रहा है । उनको इस्लाम में धर्मान्तरित कर उनकी सामाजिक और आर्थिक स्थिति के अनुसार फहरिस्त बनाई जाए जिससे इसी के अनुसार उन्हें पारितोषिक इत्यादि दिए जा सकें उन सभी स्त्री पुरुषों को समुचित कपड़ा पहनने को दिया जाए ।

18 जनवरी 17901 को टीपू द्वारा सैयद अब्दुल दुलाई को लिखे गए पत्र से ' पैगम्बर मौहम्मद और अल्लाह की कृपा से कालीकट के लगभग सभी हिन्दू मुसलमान बनाए जा चुके हैं , कोचीन राज्य की सीमाओं पर ही कुछ हिन्दू रह गए हैं जिनका धर्मान्तरण शेष रह गया है। उनकों भी शीघ्र मुसलमान बनाने का मेर दृढ़ संकल्प हे हैं इस ध्येय को प्राप्ति के लिए मैंने जेहाद छेड़ा हुआ है । ''

19 जनवरी 1790 को टीपू द्वारा बद्रूस्समन खाँ को लिखे गए पत्र से : '' क्या तुम्हें नहीं मालूम कि हाल में ही मालाबार में मैंने महान विजय प्राप्त की है और (वहाँ के) चार लाख हिन्दुओं को मुसलमान बनाया हैं । अब (त्रावणकोर के) उस शप्त राजा रमन नायर पर शीघ्र ही आक्रमण करने का संकल्प है । इस विचार से कि शीघ्र ही वह और उसकी प्रजा मुसलमान बन जाए । मैंने प्रसन्नता पूर्वक श्री रंग पटनम वापिस जाने का विचार त्याग दिया है ।

प्रत्यक्षदर्शी द्वारा वर्णन

टीपू द्वारा इस्लाम के प्रसार के लिए की जा रही नृशंसताओं का आँखों देखा हाल तत्कालीन पुर्तगाली यात्री और इतिहासकार फ्री बार्तोलोमाको ने लेखनी बद्ध किया है ˙ उसने मालाबार में 1790 में जो दृश्य देखे उनका वर्णन इस प्रकार है : पहले 30000 बर्बर लोगों (मुसलमानों) की सेना आई उसके पीछे फ्रेंच कमांडर एम0 लैली का तोपखाना था । टीपू हाथी पर सवार था और उसके पीछे 30000 मुसलमानों की एक और सेना चल रही थी । काली कट के अधिकांश स्त्री पुरुषों को फाँसी पर लटका दिया गया । पहले माताओं को फाँसी दी गयाी । उनके बच्चे उनकी गर्दन से बंधे हुए थे । **उस नृशंस हत्यारे टीपू ने नंगे हिन्दू और इसाइयों को हाथी के पैरों से बंधा वकर इतना घसीटवाया कि उन लाचार लोगों के शरीर चिथड़े चिथड़े हो गए । हिन्दू मन्दिरों और गिरजाघरों को अपवित्र किया गया , जलाया गया और फिर खुदवा दिया गया । .... जिन लोगों ने मुसलमान बनने से इंकार किया उनका उसी स्थान पर तत्काल वध कर दिया गया ।** उपरोक्त तथ्य मैने उन लोगों से इकटठे किए हैं जो टीपू की सेना से किसी प्रकार बच कर भाग निकले और वरापुझा पहुँचने में सफल हो गए । यह स्थान कार

माइकल क्रिश्चियन मिशन का केन्द्र है । मैनें स्वयं बहुत से लोगों की वरापुझा नदी को पार करने में सहायता की ।

परतु जब इस सैनिक को लगाा कि उसकी पराजय अंग्रेजी सेनाओं द्वारा प्रायः निश्चित है उसने बचे खुचे हिन्दू मंदिरों को और उनके पुजारियो को दान देकर अपने लिए हिन्दू देवताओं से प्रार्थना करने की याचना की ।

इन मुस्लिम आक्रमणकारियों , शासकों और अधिकारियों ने भारत के इस्लमीकरण के ध्येय को प्राप्त करने के लिए 1000 वर्षों में जो इतिहास रचा उसके विषय में विल ड्यूरेंट ने अपनी पुस्तक ''हिस्टी आफ सिविलाइजेशन '' में लिखा है कि : विश्व के इतिहास की अत्यधिक रक्तरंजित गाथा इस्लाम के शासनकाल की है उसके फलस्वरूप शाहजहाँ का काल आते आते हिन्दुओं की दशा क्या हो गयी थी उसका वर्णन करते हुए शेख अब्दुर्रहमान लिखते हें कि '' अग्नि पूजक और हिन्दू इतने भयभीत रहते थें कि सड़कें और बाजारों में खुलेआम गौवध होने पर भी कोई बोल नहीं सकता । इस्लाम इतना बलशाली हो गया है कि हिन्दू खुशी खुशी अपनी बेटियाँ बादशाह और अमीरों को दे देते हैं ।

सूफियों द्वारा भारत का इस्लामीकरण

सूफियों के कारनामों दो अंग्रेजी पुस्तके हाल ही में प्रकाशित हुई हैं , एक है सैयद अथर अब्बास रिजवी की पुस्तक '' द हिस्ट्री आफ सूफिज्म इन इण्डिया ''। इस पुस्तक के दो खण्डों में लगभग 1000 पृष्ठ हैं दूसरी पुस्तक '' श्राइन एण्ड कल्ट आफ मोइनुद्दीन चिश्ती आफ अजमेर '' हैं , लेखक हैं पी0 एम0 करी । स0 अबकल हसन अली नदवी की पुस्तक ' मुस्लिम्स इन इंडिया ' तथा लीगेसी आफ मुस्लिम रूल इन इण्डिया भी इस विषय पर पर्याप्त प्रकाश डालती है। । इस अध्याय में हमने मुख्यतया इन्हीं पुस्तकों को आधार बनाया है ।

'' जाफर मक्की द्वारा 11.12.1489 ई0 के एक पत्र के अनुसार हिन्दुओं के इस्लाम में धर्मान्तरण के मुख्य साधन थे : मृत्यु– भय , पूरे परिवार की गुलामी का भय , आर्थिक प्रोत्साहन , प्रलोभन (पुरुस्कार , पेन्शन , युद्ध , लूट) हिन्दुओं में व्याप्त अंधविश्वासें की कट्टरता तथा मिशनरियों द्वारा उन्हें फुसलाया जाना '' , मौहम्मद बिन कासिम से लेकर अन्तिम मुस्लिम शासक तक भारत में बिना अपवाद सभी मुस्लिम सुल्तानों और बादशाहों ने उपर्युक्त तरीकों का हिन्दुओं के धर्मान्तरण के लिए सुविधानुसार उपयोग किया ।

यद्यपि इस लोभ , प्रोत्साहन , जोर जबरदस्ती , मृत्युभय , आर्थिक दबाव और गुलामी के भय से सहस्रों हिन्दू इस्लाम ग्रहण कर रहे थे परन्तु फिर भी भारत की विशाल जनसंख्या को और **हिन्दुओं के में धर्मान्तरण के विरोध को देखते हुए उसकी गति अति धीमी थी । इस कमी को पूरा करने तथा अफगानिस्तान , ईरान इत्यादि देशें की तरह भारत के सम्पूर्ण इस्लामीकरण के ध्येय की प्राम्ति के लिए सूफियों ने बीड़ा उठाया ।**

विशाल भारत के गाँव गाँव , कस्बों कस्बों और शहरों के आसपास लाखों मजारें तथा कथित बाबा या पीर लोंगों की है। जिनमें से अधिकांश के साथ गाजी अथवा शहीद शब्द जुड़ा है । गाजी एक प्रशंसित पद माना जाता है इसका अर्थ है किसी काफिर की हत्या करने वाला महापुरुष भले ही वह हत्या छल से की गयी हों । शहीद का अथवा किसी काफिर के हाथ से मारा जाने वाला अथवा इस्लाम की उन्नति के लिए युद्ध में अथवा ब्रिटिश शासन द्वारा मृत्यु दंड पाया व्यक्ति । **ये लोग कोई संत महात्मा नहीं थे । ये तो उन मुस्लिम सेना के साधारण सैनिक अथवा छोटे बड़े कमाण्डर थे जो भारत के इस्लामीकरण के लिए उन क्षेत्रों में अए थे । और उस स्थान पर युद्ध में हिन्दुओं द्वारा मार डाले गए थें** । बाद में उनके अनुयायियों द्वारा उनकी कब्र को मजार का रूप दे दिया गया । चमत्कार , कष्ट निवारण करने के किस्से प्रचारित कर दिए गए । अंध विश्वासी , मूर्ति पूजक हिन्दू अपने पत्थर के देवी देवताओं से निराश होकर उनकी पूजा में जुट गए । इनमें **अधिकांश कब्रें उन सूफियों की भी हैं जिन्होंने बड़े पैमाने पर हिन्दुओं को मुसलमान बनाया ।**

ये सूफी लोग धर्मानतरण के जुनून में इतने सरोबार थे कि समय समय पर तलवारें उठाकर काफिरों के विरुद्ध युद्ध में भी उतर आते थे । सिलहट के शेख जलाला और उनके तुर्किस्तानी शिष्य मध्य ऐशिया से आए ख्वाजगान नक्शबन्दी इस परम्परा के कुछ उदाहरण हैं । इन लोगों को अपने पूर्वज सूफियों द्वारा ईरान तथा मध्य एशिया के काफिरों के सामूहिक

धर्मान्तरण का अनुभव था जिसका उपयोग भारत में हिन्दुओं के धर्मान्तरण के लिए करना चाहते थे । बताया जाता है कि 14 वीं शताब्दी में इस्माइली प्रचारकों द्वारा अपने हिन्दू भक्तों मे यह प्रचार किया जाता था कि (चौथे खलीफा) अली विष्णु के 10 वे अवतार , आदम शिव के दूसरे स्वरूप और मौहम्मद साहब वास्तव में ब्रह्म थे । (रिजवी 1 , पृ0 110)

वेद और पुराणों में मौहम्मद साहब का वर्णन है यह दुष्प्रचार भी मुस्लिम विद्वानों द्वारा लिखित अनेक पुस्तकों में किया जा रहा है । हिन्दुओं पर प्रभाव डाले के लिए ये लोग न केवल हिन्दू संन्यासियों और योगियों जैसी वेषभषा अपना लेते थे अपितु जंगलों में जाकर हिन्दू सन्तों की तरह योग साधना और तपस्या का भी ढोंग करते थे । भजन कीर्तन प्राणायाम और हठयोग की क्रियाओ की साधना इसी उद्देश्य से की जाती थी । किन्तु भजन कीर्तन मौहम्मद और अल्लाह के नाम का होता था । जब लोग इनकी तपस्या और साधना से प्रभावित होकर उनकी ओर आकृष्ट हो जाते थे तो ये अपने जादुई चमत्कारों के ढोंग द्वारा उन पर रौब जमा लेते थें उन्हें विश्वास दिला देते थे कि उनका परमात्मा से सीधा और घनिष्ठ सम्बन्ध है । जैसे जैसे उनकी चमत्कारी शक्तियों की चर्चा जनता में फैलती जाती थी वैसे वैसे ही उनके भोले भाले अंध्सविश्वासी हिन्दू भक्तों की संख्या बढ़ती जाती थी । उदाहरण के तौर पर दिल्ली के सूफी निजामुद्दीन औलिया के विषय में चर्चा मशहूर थी कि राम को उनके पास पंखदार ऊंट आता था जिस पर बैठ कर वह प्रतिदिन काबा जाकर नमाज पढ़ते हैं और प्रातः काल से पूर्व ही वापिस आ जाते हैं ।

शेख निजामुद्दीन औलिया का विशाल भंडारा भी चलता था । यद्यपि ये शेखहिन्दुओं के धर्मान्तरण मं प्रकटतः कोई रुचि नहीं दिखते थे परन्तु इस भंडारे के लालच में सहस्रों हिंदू मुसलमान बनते होंगें शेख केवल मुसलमानों की दरिद्रता से ही द्रवित होते थे । इसका प्रमाण उनके उद्गार है जो रिजवी पूर्वादधृत पुस्क के खंड 1 में पृष्ठ164 पर दिए गए हैं :

.... बड़ी संख्या में लोग मेंरे पास आकर अनेक कष्टों और दुखों की गाथा सुनाते हैं । यह सुकर मेरा हृदय और आत्मा द्रवित हो जाते हैं **वह कैसा हृदय जो मुसलमानों के दुखों को सुन द्रवित न हो जाए ....** (रिजवी पृ0162) शेख के पास उनके अनेक शिष्य हिन्दुओं को बहला फुसलाकर धर्मान्तरणके लिए लाते थें ।

शेख के अभिन्न मित्र अमीर खुसरो अपनी मसनवी में लिखते हें (मुस्लिम राजनीतिक चिंतन और आकांक्षाए , पृ0 63)

जहाँ रा कदीम आमद ई रस्मों पेशः । कि हिन्दु बुबद सैदे तुर्का हमशः ।।
अर्जी बेहमदों स्विते तुको हिन्दू । कि तुर्क स्त चूं शेंर हिन्दू चु माह ।।
जि रस्मं कि सफतस्त चर्खे खां रा । बुजूद अज पये तुर्क शुद हिदुआं रा ।।
कि तुर्कस्त गालिब बर ऐशाँ चुं कोशद । कि हम गोर दौ हम खरद हम फरोशद ।

अनुवाद – निरंतर सत्य यह विधि का विधान है ।
तुर्क के लिए जन्म हिन्दू की पहचान है ।।
तुर्क की शिकारगाह हिन्दोस्तान है ।।
थोड़े ही प्रयास से तुर्क यदि चाहे तो ।
उनका कय , विकय , दासता आसान है ।।

उनका दूसरा शिष्य जियाउद्दीन बर्नी था जो अपनी तारीखे फीरोजशाही के लिए विख्यात हैं इस इतिहास को पढ़ने से ही पता चल जाता है कि बर्नी हिन्दुओं के विषय में कितने कुत्सित विचार रखता था । वह अपनी पुस्तक तारीखे फीरोजशाही में हिन्दुओं के लिए कुत्ते और कौवे जैसे अपमान जनक शब्दों का प्रयोग करता है । आरम्भ में सूफी लोग अपने भक्तों को ओम अथवा राम ने स्थान पर अल्लाह का नाम जपने को और मौहम्मद की शरण

माँगने की विनती करने को कहते थे । साथ ही साथ उन्हें यह सहेज भी देते थे कि यह सब गुप्त रूप से करें क्योंकि स्थानीय हिन्दुओं द्वारा विद्रोह का भय सदैव बना रहता था । जब काफी भक्त अल्लाह और मौहम्मद के अनुयायी हो जाते थे तो शेष हिन्दू स्वयं ही उनसे भयभीत होने लगते थे ।

सूफी अपना तालमेल मुसलमान जमींदारों और शासन के दूसरे अधिकारियों से बनाए रखते थें इसलिए शासन से न्याय पाने के लोभ में अने लोग उनके कृपा पात्र बनने के लिए इस्लाम ग्रहण कर लेते थे । हिन्दू जमींदारों को मुसलमान बनाना विशेष लक्ष्य रहता था क्योंकि उन लोगों के धर्म परिवर्तन से जमींदार की समस्त जाति अथवा प्रजा का धर्म परिवर्तन सरल हो जाता था । सूफियों की धर्म परिवर्तन की लगन का पूरा अन्दाजा लगाने के लिए उनका संपूर्ण इतिहास पढ़ना आवश्यक है कुछ उदाहरण ऊपर दिए गए हैं । एक और उदाहरण रुदौली के शेखअहमद अब्दुल हक के वंशज शेख अब्दुल रहमान चिश्ती का है । इन्होंने संस्कृत में अपूर्व विद्वता हासिल की थी । उसका उपयोग उन्होंने भगवदगीता के अर्थ को इस्लामी दर्शन के रंग में रंग कर उसका प्रचार करने में किया । इन्होंने मिशतुल – मखलूकाम नामक पुस्तक भी लिखी जिसमें योग वाशिष्ठ की विश्वोत्पत्ति को मुस्लिम विश्वास का रंग दिया ।

कुछ लोगों का विश्वास है कि सूफिस्म भारतीय दर्शन के भक्ति और ध्यान योग की ही उपज है जिसका प्रभाव इस्लाम के पदार्पण से पहले मध्य एशिया और उसके आस पास के क्षेत्रों में व्यापक रूप से हो गया था । चाहे भारतीय दर्शन की सूफिज्म के विकास में कोई भूमिका रही हो या न रही हो मुस्लिम सूफी हर प्रकार कट्टर मजहबी मममुसलमान होते हैं और हिन्दू काफिरों , मूर्ति पूजकों इत्यादि को इस्लाम में दीक्षित करना अथवा उनको समूल नष्ट कर देना अपना मुख्य धार्मिक कर्त्तय समझते हैं । सूफियों की अनेक परम्पराएं हैं । इनके ध्यान , कीर्तन आदि के तरीकों में अनेक भेद हो सकते हैं परन्तु हिन्दुओं के प्रति उन सबका दृष्टिकोण वही है जो एक मजहबी मुसलमान का होना चाहिए । उनको मुसलमान बनाना अन्यथा नष्ट कर देना । (रिजवी 1 , पृ061)

1000 ई0 के बाद भारत के इस्लामीकरण का जो दूसरा चरण (लेखक की पुस्तकः भारत के इस्लामीकरण के चार चरण) प्रारम्भ हुआ उसमें एक ओर तो महामूद गजनवी से प्रारम्भ होकर दूसरे अनेक आक्रामक तलवार और कुरान लेकर भारत में घुसे अथवा उनके वंशजों ने भारत में इस्लाम का विस्तार तलवार के बल पर किया । दूसरी ओर सूफी लोग मुख में भजन , कीर्तन चमत्कार के दावे और बगल में तलवार और कुरान लेकर आए । इनमें से अधिकांश प्रकट रूप से तलवार का उपयोग नहीं किया किन्तु कुछ ऐसे भी थे जो आवश्यकता पड़ने पर तलवार लेकर स्वयं भी जिहाद में उतर पड़ते थे ।

सूफी इतने शक्तिशाली थे कि मुगलकाल के पतन के समय जब मेवाड़ और मारवाड़ के राजपूत स्वतंत्र हो गए तब भी वे नागौर में सूफियों के प्रभाव को कम नहीं कर सके ।

जब अलाउद्दीन खिलजी ने दक्षिण में देवगिरि विजय किया तो सैकड़ों सूफियों ने वहाँ जाकर अपनी खानकाहें स्थापित कर ली और धर्मान्तरण कार्य में लग गए । इनमें से कुछ ने खुल कर हिन्दुओं के विरुद्ध युद्ध में भाग लिया और इतने हिन्दुओं का वध किया कि उनके नाम के साथ कत्ताल और कुफ्फार भंजन जैसे शब्द जुड़ गए । इनमें कुछ दूसरे ऐसे भी थे जो वर्षों तक जंगलों में योग साधना और तपस्या का ढोंग करते थे । धीरे धीरे उनकी योगी , तपस्वी ब्रह्मचारी होने और चमत्कार करने की ख्याति आस पास की हिन्दू जनता मे फैल जाती थी । उनके हिन्दू भक्त बनने लगते थे और फिर प्रारम्भ होता था वही धर्मान्तरण का सिलसिला ।

महमूद गजनवी के आक्रमणें के साथ साथ 11 वीं खताब्दी में ही मध्य एशिया से बहुत से सुन्नी सूफी शेख भारत में आ कर बसने प्रारम्भ हो गए थे ।

बंगाली लड़ाकू सूफियों में एक मुख्य नाम है सिलहट के शेख जलाल का । गुलजार ए अबरार के अनुसार शेख जलाल जन्म से तुर्किस्तानी था और सिलसिले ख्वाजगान के सैयद अहमदमसाबी का खलीफा था । उसकी विनती पर जलाल के पीर ने उन्हें आशीर्वाद दिया थ कि वह जिस प्रकार आत्मिक जिहाद में विजयी हुए हैं उसी भांति दारुल हर्ब (काफिरों के देश) में भी कुफ्र के विरुद्ध जिहाद में सफल हों सैयद ने अपने प्रतिभाशाली 700 शिष्यों को शेख जलाल के साथ इस मिशन पर भेजा। यह कोई शान्तिपूर्ण धर्म प्रचार नहीं था । युद्ध में मिली लूट से वह ऐश का जीवन बिताता था । शेख मार्ग में विजय किए गए क्षेत्रों में इसलाम के प्रचार के लिए अपने साथियों को छोड़ता जाता था । जब वह सिलहट पहुँचा तो उसके साथ केवल 313 साथी रह गए थे । परन्तु अपने 383 शिष्यों के प्रयास से जो अब तक के विजित क्षेत्रों पर शासन स्थापित कर चुके थे कितनी सशस्त्र सेना राजा गौढ़ गोविन्द के विरुद्ध युद्ध करने के लिए भेजी उसका वर्णन इतिहासकार नहीं करता । आक्रमणकारी सेना की संख्या कम और विरोधी सेना की संख्या बढ़ाचढ़ाकर बताने का तात्पर्य होता है मुस्लिम सेना के विजयी होने के कारण इसलाम पर अल्लाह की विशेष कृपा दर्शाना मुसलमान इतिहासकार लिखता है : **वहाँ उनका राजा गौढ़ गोविन्द की कई लाख पैदल सेना का कई सहस्र (मुस्लिम) घुड़सवारों की सेना** से भयानक युद्ध हुआ और शेख जलाल विजयी हुए । उन्होंने विजित क्षेत्र को अपने साथियों में बाँट दिया , **वहाँ की औरतों से विवाह कर लिया और वे वहीं बस गए ।** शेख जलाल के बारे में अनेक चमत्कारी काहानियाँ प्रसिद्ध हो गयी । जैसे कि वह प्रातः काल मक्का में नमाज पढ़कर आते हैं । **इन चमत्कारी बातों से प्रभावित होकर अनेक हिन्दू और बौद्ध उनके भक्त होकर मुसलमान हो गए ।**

शेख जलाल और उसके तुर्किस्तानी शिष्य मध्य ऐशिया के ख्वाजगान और नक्शबन्दिया ऐसे सूफी थे कि वे यदा कदा कुछ वर्ष तलवार लेकर जिहाद करते थे और हिन्दुओं का धर्मान्तरण करते थे । शत्तरिया , कादिरइया और नक्याबन्दिया , सिलसिले मे सूफी जिन्होंने 14 वीं शताब्दी में अपनी खानकाहें स्थापित करनी प्रारक्भ कर दी थीं अपने पूर्वजों द्वारा मध्य एशिया और फारस के इस्लामीकरण के अनुभवों से खूब परिचित थे और उस धर्म परिवर्तन के अनुभव का प्रयोग उन्होंने अपने को हिन्दुस्तान की परिस्थितियों में ढालकर किया । उन्होंने बंगाल से लेकर मालवा तक अपनी खानकाहें स्थपित कीं । इसके शिष्य वहाँसे पश्चिमी गुजरात तक फैल गए ।

सुहरावर्दिया , शेख जलालुद्दीन , मीर सैयद अली हमदानी और उसके पुत्र मीर मौहम्मद की खानकाओ मे जिन अनेक सूफियों को ट्रेनिंग दी जाती थी , **उनका मुख्य ध्येय हिन्दुओं को मुसलमान बनाना था ।** इन सूफियों ने न केवल भारत में हिन्दुओं , बौद्धों और जनजातियों का बड़े पैमाने पर धर्मान्तरण किया अपितु बंगाल होते हुए दक्षिणी पूर्वी एशिया के हिन्दू और बौद्ध उपनिवेशों जावा, सुमात्रा, मलाया ,इण्डोनेशिया इत्यादि में जाकर वहाँर राजाओं का धर्मान्तरण कर इन देशों को मुस्लिम देश बना दिया ।

बहराइच का सलार महमूद गाजी

उन सूफियों में जो तलवार लकर भारत के इस्लामीकरण के लिए इस देश में घुसे एक विशेष नाम है शहीद सिपहसालार मसूद गाजी का जिसका साधारणतया गाजी मियाँ के नाम से जाना जाता है । इसकी वास्तविक मजार उत्तर प्रदेश के पूर्वी जनपद बहराइच में है ।

यह सुल्तान महमद गजनवी की बहिन का पुत्र था और सोमनाथ के मन्दिर को तुड़वाने के लिए महमद को उसने ही प्रेरित किया था । इसने अपने पिता और घुड़सवारों के साथ गजनी से चलकर पंजाब में प्रवेश किया। मार्ग में लूट के लोभ में अनेक नवधर्मान्तरित मुसलमान इसके साथ जुड़ते गए । प्रारम्भ से हिन्दुओं के सामने इसका एक ही प्रस्ताव था '' इस्लाम या मृत्यु '' । जिस स्थान से चलकर यह पंजाब से बहराइच पहुँचा उस मार्ग पर आज सहस्रों मजारें उसके उन साथियों की हैं जो हिन्दुओं से युद्ध करते उस स्थान पर मारे गए । उन **सबके नाम के साथ गाजी, शहीद, पीर अथवा बाबा आदर सूचक शब्द जोड़ दिए गए हैं ।** गाजी अर्थात काफिर का वध करने वाला । शहीद अर्थात् काफिर के हाथ से धर्मयुद्ध में मारा जाने वाला । पीर अर्थात् चमत्कारिक गुरु । बाबा अर्थत् साधु , फकीर अथववा आदरणीय गुरु । बहुत बाद में अंग्रेजी काल में ये शब्द उन लोगों नाम के साथ जोड़ दिए गए जिन्हें साम्प्रदायिक दंगों अथवा हिन्दुओं के कत्ल के आरोप में अंग्रेजी शासन द्वारा मृत्यु दण्ड दिया गया ।

चार वर्ष की आयु से ही सलार मसूद को इस्लाम की शिक्षा दी गयी थी , 50000 घुड़सवारों के साथ उसने सिन्धु नदी पार की । उसकी आयु उस समय 17 वर्ष थी यह सेना जहाँभी पहुँची तबाही मच गयी । महमूद गजनवी के दो आक्रमणों ने मुल्तान को पहले वीरान कर दिया था । वहाँ के राजा उछ में जकर बस गए थे । उन्होंने मसूद से कहलवाया कि विदेशी भूमि पर इस प्रकार आक्रमण करने का क्या औचित्य है ? मसूद ने उत्तर दिया : **भूमि अल्लाह की है । वह अपने जिस दास को देना चाहता है देता है । मेरे पूर्वजों का यही विश्वास रहा है कि काफिरों को मुसलमान बनाना कर्त्तव्य है । यदि वह हमारा धर्म स्वीकार कर लें तो ठीक अन्यथा हमें उनका वध कर देना चाहिए ।** इसके पश्चात मसूद ने हिन्दू राजाओं पर आक्रमण किया और असंख्य हिन्दुओ को मौत के घाट उतार दिया । बहुत से तुर्क भी मारे गए । वर्षा ऋतु के अन्त तक मसूद मुल्तान में ही पड़ रहा । उसके बाद वह अवध की ओर चल पड़ा । मार्ग मं उसने अपना इस्लाम अथवा मृत्यु का अभियान अगली बरसात के अन्त तक जारी रखा ।

वर्षा ऋतु के पश्चात् वह दिल्ली की ओर चल पड़ा राजा महीपाल दिल्ली का शाासक था । उसकी विशाल सेना से मसूद भयभीत हुआ परन्तु उसी समय गजनी से नई सेना उसकी सहायता के लिए आ पहुँची । इस युद्ध में भी असंख्यं हिन्दू मारे गए । बहुत से तुर्क सरदार भी खेत रहे । महाराज महीपाल भी युद्ध में वीरगति को प्राप्त हुए । तुर्की सरदार जहाँ मरे वहीं दफन कर दिए गए और कुछ समय उपरान्त अज्ञानी हिन्दुओं के उपास्य बन गए । अनेक हिन्दू भय और लोभ से मुसलमान हो गए । धर्मान्तरित हिन्दुओं में से 5000 अथवा 6000 लोगों की नई सेना भर्ती की गयी । इसे बाद मसूद मन्नौज की ओर चल पड़ा । वहाँ के राज अजयपाल ने जो महमूद द्वारा परास्त किया जा युका था उसकी काफी आवभगत और सहायता की ।

वहाँ मसूद ने गंगा पार की और सतरिख (सीतापुर जनपद) की ओर चल पड़ा । सतरिख हिन्दुओं का पवित्र तीर्थ था और वहाँ हिन्दुओं की घनी आबादी थी । इसलिए उसने

वहाँ डेरा डाला और अपने सरदारों को सेना देकर चारो ओर भेजते समय कहा : हम तुम्हें अल्लाह के सुपुर्द करते है । तुम जहाँ जाओ पहले समझा बुझाकर हिन्दुओं को मुसलमान बनाओ । यदि वे इस्लाम ग्रहण कर लें तो उन पर दया करना अन्यथा उनका वध कर देना । फिर वह गले मिलकर अपनी अपनी दिशा में चल दिए । **मुस्लिम इतिहासकार लिखता है कैसा अद्‌भुत दृश्य है कैसी अद्‌भुत मित्रता ? कैसा अद्‌भुत विश्वास है कि केवल सत्यमत (इस्लाम) के प्रचार के लिए बिना भय के इस प्रकार कूद पड़ना ?**

मीर बख्तियार दक्षिण की ओर चल पड़ा और कानपुर तक पहुँच गया । वहाँ वह युद्ध में मारा गया । वहाँ उसकी विश्यात मजार है । मसूद ने अमीर हसन अरब को महाना पर और मीर सैयद अजीजुद्दीन को गोपामऊ पर आक्रमण करने भेजा । मीर सैयद अजीजुद्दी अब लाल पीर के नाम से उस क्षेत्र में मशहूर है । मलिक फजल को बनारस पर आक्रमण करने के लिए भेजा गया । मसूद सतरिख मे ही ठहरा रहा ।

इस समय कर्रा और मानिकपुर के राजाओं ने मसूद को उनके देश से शान्तिपूर्वक वापिस जाने के लिए अन्यथा युद्ध के लिए तैयार रहने के लिए दूत भेजे । **मसूद ने उत्तर दिया : हम यहाँ मौज मस्ती के लिए नहीं आए हैं । हम यही रहेंगे और इस भूमि से कुफ और काफिरों को समूल नष्ट कर देंगे ।** सलार मसूद के सिपहसालार सैफुद्दीन ने बहराइच में तुरन्त सहायता माँगी तो मसूद ने उसकी सहायता के लिए सतरिख से बकराइच के लिए प्रस्थान किया ।

बहराइच में हिन्दुओं का एक तीर्थ स्थान सूरज कुण्ड होता था । वहाँ सूर्य देवता की एक प्रतिमा थी और देश भर से हिन्दू सूर्य ग्रहण के अवसर पर वहाँ पूजा और कुण्ड में स्नान के लिए आते थे । मसूद को यह देखकर अपार कष्ट होता था । वह बहुधा कहा करता था कि वह कुफ्र के इस गढ़ को नष्ट कर देगा । **किन्तु बहराइच में चारों ओर से हिनदू राजाओं ने अपनी अपनी सेना के साथ मसूद को घेर लिया । बार बार युद्ध होता रहा , 15 जून 1033 को सांयकाल के समय पासी राजा सुहल देव के एक बाण से मसूद का प्राणान्त हो गया । पूरी मुस्लिम सेना नष्ट हो गयी ।** मसूद के आदेश से जितने मुसलमान सैनिक मरते थे वे सूरज कुण्ड में डाल दिए जाते थे । मसूद का विचार था हि उनकी दुर्गन्ध से हिन्दू अपने तीर्थ को भ्रष्ट समझ कर त्याग देंगे । मसूद की मृत्यु के बाद उसे वहाँ दफन कर दिया गया जहाँ उसकी मृत्यु हुई थी । बाद में इस क्षेत्र मं मुस्लिम राज्य हो जाने पर उसे सूरज कुण्ड के पास दफना दिया गया । (स्रोत : इलियट एण्ड डाउसन : हिस्ट्री आफ इण्डिया बाई इट्स ओन हिस्टारियन्स खण्ड–2 पृष्ठ 529:547)

लखनउ का खम्मन पीर बाबा

सलार मसूद के तलवार अथवा इस्लाम अभियान में मारे गए सहस्रों लोगों की अनेक मजारों में दो मजारें लखनउ के हिन्दू निवासियों की अभी कुछ 235 – 730 वर्षों से अत्यन्त श्रद्धा और पूजा की केन्द्र बन गयी है । एक है चारबाग का खम्मनपीर बाबा। इसकी मजार लखनउ जंक्शन में रेल की पटरियों के बीच बनी है । पहले इसका कोई नाम भी नहीं जानता था । इधर निछले 25 – 30 वर्षों से इसके सहस्रों हिन्दु भक्त बन गए हैं और सरकारी भूमि घेरकर इसका अपूर्व विस्तार कर लिया गया है । सप्ताह में एक दिन मेला लगता है और लखनउ जंक्शन का स्वाभाविक कार्य अस्त व्यस्त हो जाता है । सहस्रों हिन्दू रेल की पटरियों को कूदते फाँदते मजार पर जाते आते हैं ।

दिलकुशा लखनऊ का हजरत शहीद कासिम बाबा

लखनऊ चारबाग मं स्थित खम्मन परबाबा की मजार की तरह दिलकुशा में स्थित हजरत शहीद कासिम बाबा की मजार भी हिंन्दुओं की विशेष श्रद्धा की केन्द्र है ।

मायावती सरकार का मंत्री राजभर अपने रोगों से पीछा छुड़ाने हेतु इस दरगाह की शरण में जाता रहा है । (दैनिक जागरण 6–9–1995)

खम्मन पीर बाबा की तरह कासिम बाबा भी शहीद सलार मसूद गाजी के साथ समस्त भारत निवासियों को तलवार के बल पर मुसलमान बनाने के इरादे से आया था और उसी तरह हिन्दुओं से युद्ध करते हुए लखनऊ में मारा गया । इसी लिए उसके नाम के साथ शहीद शब्द मुसलमानों ने जोड़ा ।

दैनिक जागरण लखनऊ 25.07.1994 के अनुसार दिलकुशा गार्डेन स्थित हजरत शहीद कासिम बाबा की मजार पर चादर चढ़ाकर श्रद्धासुमन अर्पित करने के बाद वहाँ आयोजित समारोह को सम्बोधित करते हुए **श्री बोरा गवर्नर उत्तर प्रदेश ने कहा कि भारत में ऋषि मुनियों और सूफी सन्तों ने मानवता की जो सबसे बड़ा संदेश दिया है वह किसी देश, धर्म, जाति और सम्प्रदाय तक ही सीमित नहीं है । हजरत शहीद कासिम बाबा ने भी मानव जाति के उद्धार के लिए धर्म , जाति , भाषा और क्षेत्र की संकीर्णताओं के ऊपर उठकर प्रेम, एकता, और मानवता का पैगाम दिया है ।** उनहोंने प्रसन्नता व्यक्त की कि प्रदेश के मुख्यमंत्री श्री मुलायम सिंह यादव ने हजरत शहीद कासिम बाबा की मजार तक सम्पर्क मार्ग निर्मित करा दिया है तथा वहाँ बिजली पानी की भी समुचित व्यवस्था करा दी है ।

उसी समारोह को सम्बोधित करते हुए श्री मुलायम सिंह यादव भू0 पू0 मुख्यमंत्री उ0 प्र0 तथा पूर्व रक्षामंत्री (भारत सरकार) ने कहा कि : 900 वर्ष से भी पुरानी इस दरगाह पर सभी धर्मों तथा आस्था के लोग नतमस्तक होते हैं ं उन्होंने कहा कि यह हमारी गंगा जमुनी तहजीब का उत्कृष्ट नमूना है । **शहीद बाबा के राष्ट्रीय एकता तथा साम्प्रदायिक सद्भाव तथा आपसी प्रेम और भाई चारे को मजबूत बनाने के फतवे को पूरा किया जा सकेगा । दरगाह के आस पास की भूमि सेना के स्वामित्व में थी जिसे हस्तान्तरित कर दरगाह को दे दिया गया ।**

जिस देश के हिन्दू गवर्नर , मुख्यमंत्री और मंत्री ऐसे मनुष्य को जिसके जीवन का ध्येय की अंतिम समय तक उके पूर्वजों को तलवार के बल पर धर्मान्तरित करना रहा हो , **जिसने इस्लाम स्वीकार न करने के कारण सहस्रों हिन्दुओं का वध कर दिया हो ऐसे धर्मान्ध व्यक्ति को राष्ट्रीय एकता , साम्प्रदायिक सद्भाव और भाई चारे का संदेश देने वाला और भारत के ऋषि मुनियों जैसा प्रचारित करते हों , वहाँ साधारण अनपढ़ हिन्दू अपने गवर्नर , मुख्यमंत्री और मंत्री की श्रद्धा देखकर ऐसे क्रूर** व्यक्ति को अपना अपना अपना मुक्तिदाता समझकर उसकी पूजा करने लगे तो **क्या आश्चर्य है ?** आश्चर्य तो यह है कि ये विशिष्ट लोग सूफियों के लिए बार बार शहीद और गाजी शब्द का प्रयोग करते हैं और उसी साँस में उन्हें राष्ट्रीय एकता तथा साम्प्रदायिक सद्भाव और आपसी भाई चारे का संदेश देने वाला भी कहते हैं ? इन मजारों पर हिन्दुओं की संख्या ही अधिक आती है । इस्लाम में मजार पूजा का निषेध होने के कारण कुछ ही अंधविश्वासी मुसलमान इन पर श्रद्धा सुमन चढ़ाने आते हैं । इस प्रकार हिन्दुओं के धन से ही उनका विस्तार हो रहा है । मियां की जूती मियां के सिर ।

शेख जलालुद्दीन तबरीजी

यह सूफी बंगाल में लखनौती में रहता था । वहाँ धीरे धीरे इसने काफी भूमि पर कब्जा कर लिया । इसके बाद वहाँ अपने शिष्यों को छोड़कर वह देवतल्ला चला गया । वहाँ किसी काफिर ने एक बड़ा मन्दिर और कुआँ बनवाया था । **इस सूफी ने उस मन्दिर को तोड़कर वहाँ अपनी खानकाह बना ली और वहाँ के हिन्दू और बौद्ध निवासियों का बड़ी संख्या में धर्मान्तरण किया । यह महाशय भी हिन्दुओं की श्रद्धा का पात्र है । उसीक स्मृति में देवतल्ला तबरीजाबाद हो गया है ।**

बंगाल में अपने धर्मान्तरण कार्य के मजबूती से संगठित हो जाने के बाद यह उत्तर प्रदेश में बदायूँ में आकर जम गया और उत्साह से यहाँ भी धर्मान्तरण करता रहा ।

बदांयूनी के अनुसार शेख दाऊद नामक सूफी पंजाब और सिन्ध में 50 से लेकर 100 तक हिन्दुओं को प्रतिदिन मुसलमान बनाता था । सम्राट अकबर के आदेशों के बावजूद सूफी लोग धड़ल्ले से हिन्दुओं का धर्मान्तरण कर रहे थे । जौनपुर से लेकर बिहार तक के मुस्लिम बहुल क्षेत्र कादरियों के रशदिया खानकाओं की देन है । दीवान अब्दुर्रशीद के वंशजों और शिष्यों के बंगाल में अनेक खानकाहें स्थापित कीं । शेख नियामतुल्लाह कादिरी और उसके वंशजों और शिष्यों की सम्राट औरंगजेब और उसके भाई शाहजादा शाहशुजा ने बराबर सहायता की जिससे बंगाल के उस भाग का इस्लामीकरण हो गया और अन्ततः इस्लामी बांग्लादेश बन गया ।

अजमेर के मोइनुद्दीन चिश्ती

भारत के सूफियों में कदाचित इस सूफी की ख्याति सबसे अधिक है । इसको गरीव नवाज गरीबों पर कृपा करने वाला भी कहा जाता है । सम्राट अकबर ने एक पुत्र की लालसा में इस की मजार की कई बार श्रद्धापूर्वक यात्रा की थी । स्वाभाविक है कि तब से इसका ओहदा और भी ऊँचा हो गया । इस सूफी को महान सन्त, धर्मनिरपेक्षता और भारत की सम्मिश्रित गंगा यमुनी संस्कृति की साक्षात मूर्ति कहा जाता है । धर्मनिरपेक्षता की मिसाल बताया जाता है । छोटे लोगों की तो बात ही छोड़ दें हमारे प्रधानमंत्री और राष्ट्रपति भी उसकी मजार पर जाकर चादर चढ़ाने , शीश नवाने और मन्नत माँगने पर गर्व करते हैं । लाखों की संख्या में यात्री जिनमें अधिकांश हिन्दू होते हैं प्रतिवर्ष इसकी मजार का दर्शन करते हैं और लाखों रुपये दान में देते हैं।

कम लोग ही जानते हैं कि इस व्यक्ति ने भारत के इस्लामीकरणमें कितनी उल्लेखनीय भूमिका निभायी है और आज अपनी मृत्यु के लगभग 800 वर्ष पश्चात् भी निभा रहा है । पी0 एन0 करीज की पुस्तक द श्राइन एण्ड कल्ट ऑफ मुइनुद्दीन चिश्ती ऑफ अजमेर में इसका विस्तारपूर्वक वर्णन उद्‌धृत किया गया है ।

जैसे कि कमोबेश प्रत्येक सूफी और मजार के चमत्कारों की कहानियाँ मशहूर हैं मुइनुद्दीन चिश्ती भी अपने चमत्कारों और सिद्धियों के लिए विख्यात है । यह मौहम्मद साहब के वंशज समझे जाते हैं । इन्होंने सूफी मत में दीक्षा उस्मान हरवानी से ली थी जोएक महान सूफी समझे जाते हैं । **सियर अल आकताब नामक पुस्तक के अनुसार उनके भारत में पदार्पण करने से वहाँ इस्लाम की स्थापना हुई । उन्होंने अपने तर्क और विद्वता से भारत में पुरातन काल से चले आ रहे कुफ्र और शिर्क (हिन्दू धर्म) के अंधेरे को नष्ट कर दिया । इसलिए इनको नबी अल हिन्द (हिन्दुस्तान का पैगम्बर) भी कहा जाता है । सत्तर वर्ष तक वह निरंतर भारत भूमि पर नमाज पढ़ते रहे । जिस पर उनकी दया दृष्टि पड़ी वह तुरंत अल्लाह का सामीप्य पा गया । (अर्थात मुसलमान हो जाता था) प्रत्येक बार जब वह कुरान का पाठ समाप्त करते थे**

अदृश्य से एक आवाज आती थी : मुइनुद्दीन तुम्हार पाठ स्वीकार है । य़द्यपि कहा जाता है कि मुइनुद्दीन सोना बनाना जानते थे परन्तु (इतना तो सत्य है) कि उनकी पाकशाला मे इतना भोजन बनता था कि नगर के सभी दरिद्र लोग वहाँ भोजन कर लेते थे । पाकशाला का नौकर जब उनके पास धन मांगने जाता था तो वह अपनी नमाज की दरी का एक कोना उठा देते थे । वहाँ अपार धनराशि रोने के रूप में पड़ी रहती थी । वह नौकर से कह देते थे जिताना चाहे उठा कर ले जाए ।

कहा जाता है कि एक बार जब वे पैगम्बर मौहम्मद की मजार की तीर्थ यात्रा पर गए तो एक दिन अंदर से आवाज आई मुइनुद्दीन को भेजो । जब मुइनुद्दीन दरवाजे पर आकर खड़े हुए तो उन्होंने पैगम्बर को बोलते देखा मुइनुद्दीन तुम मेरे मजहब का सार हो । **तुम्हें हिन्दुस्तान जाना है । वहाँ अजमेर है जहाँ मेरा एक वंशज जेहाद करने गया था । और शहीद हो गया और वह स्थान काफिरों के कब्जे में चला गया है । तुम्हारे चरण वहाँ पड़ने से एक बार फिर इस्लाम वहाँ अपनी प्रतिष्ठा प्राप्त करेगा और काफिर हिन्दू अल्लाह के कोध के भाजन बनेंगे ।**

चुनाचे मुइनुद्दीन अजमेर पहुँचे । वहाँ पहुँचकर उन्होंने कहा अल्लाह का यश बढ़े क्योंकि मैने अपने भ्राता की सम्पत्ति पर फिर अधिकार पा लिया है । यद्यपि उस समय वहाँ की झील के चारों ओर बहुत से मूर्ति मन्दिर थे , ख्वाजा ने कहा **यदि अल्लाह और पैगम्बर ने चाहा तो मुझे इन मूर्ति मन्दिरों को ध्वस्त करने में देर नहीं लगेगी ।**

सियर अल अकताब फिर वर्णन करता है कि ख्वाजा ने किस प्रकार चमत्कारिक तरीकों से उन हिन्दू गुरुओं (ब्राह्मणों) और हिन्दू देवी देवताओं पर विजय प्राप्त की जो उनके वहाँ रहने का घोर विरोध कर रहे थे ।

इन कहानियों में से एक के अनुसार उस समय के दिल्ली सम्राट् राय पिथौरा (पृथ्वी राज चौहान) का कोई विश्वासघाती सेवक जो अपने स्वामी से किन्हीं कारणों से द्वेष रखता था ख्वाजा की शरण आया। ख्वाजा ने राय पिथौरा के पास इस व्यक्ति की सिफारिश भेजी जो राय पिथौरा ने अस्वीकार कर दी । ख्वाजा ने इस पर क्रुद्ध होकर श्राप दिया : हमने राय पिथैरा को जीवित इस्लामी सेनाओं के हाथें में दे दिया है ।

इन कहानियों के चमत्कारिक भाग को छोड़ दें तो वास्तविकता यह लगती है कि अजमेर में कोई सूफी वहाँ के हिन्दुओं का धर्मान्तरण करने आया था जिसे वहाँ के हिन्दुओं ने क्रोधित होकर मार डाला । ख्वाजा जब हज करने गए तो वहाँ यह बात बताई गयी । उस धर्मान्तरण कार्य करने पर फिर वहाँ के धर्मनिष्ठ ब्राह्मणों इत्यादि ने उनका विरोध किया किन्तु अपने अथाह धन के बल पर जो कदाचित मुसलमान शासकों द्वारा उनको मिलता था उन्होंने स्थानीय अंधविश्वासी लोगों में अपनी चमत्कारिक शक्तियों का प्रदर्शन कर (जो अनेक साधु और फकीर हाथ की सफाई से आज भी कर दिखाते हैं) कुछ को मुसलमान बना लिया । इनमं कुछ ऐसे प्रभावशाली लोग भी थे जो किन्हीं कारणों से अपने स्वामी दिल्ली नरेश पृथ्वीराज चौहान से रुष्ट थे और विश्वासघात के लिए तैयार हो गए । इस स्थिति के उत्पन्न हो जाने के कारण ख्वाजा ने राय पिथौरा से सीधे सीधे अनेक आग्रह करने प्रारम्भ कर दिए । जो तिरस्कार पूर्वक नामंजूर कर दिए गए । ख्वाजा गजनी गए और तत्कालीन सुल्तान शिहाबुद्दीन गौरी को परिस्थितियाँ अनुकूल बताकर भारत पर आक्रमण के लिए आमंत्रित किया ।

शिहाबुद्दीन ने भारत पर अनेक आक्रमण किए । परन्तु हर बार पृथ्वीराज ने उसे परास्त कर उसके क्षमा माँगने पर अपनी उदारतावश उसे स–सैन्य वापिस जाने दिया ।

किन्तु पृथ्वी राज का शत्रु तो घर में ही बैठा रहा । दूसरे शत्रु भी बढ़ गए । फलस्वरूप पृथ्वीराज चौराज शिहाबुद्दीन के हाथों बन्दी बना लिए गए ।

यथार्थवादी शिहाबुद्दीन ने एक बार भी वह मूर्खता नहीं दिखाई जो पृथ्वीराज दिखाते रहे थे । हाथ में आते ही उसने पृथ्वीराज का वध कर दिया ।

सियार इल अकताब से मालूम होता है कि इस घटना से पहले ही ख्वाजा मुइनुद्दीन अजमेर के प्रसिद्ध जोगी अजयपाल को मुसलमान बनाने में सफल हो गया था । इसके पश्चात् उसने अपना डेरा जोगी के विशाल मंदिर में ही जमा लिया । मुइनुद्दीन की दरगाह पर बने बुलन्द दरवाजों में नक्काशी किए जो पत्थर लगे हैं उनको देखने से लगता है कि वे पहले मंदिर के निर्माण में प्रयोग किए गए थे । ऐसे कट्टर हिन्दुओं और हिन्दू धर्म के शत्रु ने किस प्रकार वास्तविक ध्येय को छिपाकर अपनी धर्मनिरपेक्षता का भ्रम अन्धविश्वासी हिन्दुओं में उत्पन्न किया होगा इसका नमूना आज भी प्रत्यक्ष है । एक ब्राह्मण परिवार चन्दन घिस कर वह लेप दरगाह में भेजता है जो ख्वाजा की मजार पर चढ़ाया जाता है । मुसलमानों में चंदन के लेप का प्रयोग किसी धार्मिक कृत्य में नहीं किया जाता । यह चन्दन का लेप वहाँपर अजयपाल जोगी के इष्ट देवता की मूर्ति के लिए भेजा जाता रहा होगा ।

सियार इल आरिफीन इस महान संत के जीवन कार्य का इस प्रकार जायजा लेती हैं ।

उस (मुइनुद्दीन चिश्ती) के हिन्दुस्थान आने पर उस देश में इस्लाम का मार्ग प्रशस्त हो गया । उसने (इस्लाम के प्रति) अविश्वास के अंधेरे को नष्ट कर दिया और इस्लाम का प्रकाश चारों ओर फैला दिया ।

अमीर खुर्द की दो चौपाइयों में ख्वाजा मे आगमन से पहले और पश्चात के हिन्दुस्थान का इस प्रकार वर्णन है ।

सम्पूर्ण भारत (इस्लाम) मजहब और (शरियत) के कानून से अनभिज्ञ था । किसी को अल्लाह और पैगम्बर का पता नहीं था । किसी ने काबा के दर्शन नहीं किए थे । किसी को अल्लाह की महानता का ज्ञान नहीं था ।

और ख्वाजा के आने के बाद उसकी तलवार के कारण इस कुफ्र की भूमि में मूर्तियों और मंदिरों के स्थान पर मस्जिद मिम्बर और मेहराब बन गए । जिस भूमि पर मूर्तियों गुणगाान होता था अब नारये तकवीर (अल्लाहो अकबर) सुनाई देती है । सचमुच भारत के इस्लामीकरण में मुइनुद्दीन चिश्ती का महत्त्व मौहम्मद बिन कासिम , महमूद गजनवी , शिहाबुद्दीन गौरी , खिजली , तुगलक , बाबर , औरंगजेब इत्यादि सुल्तानों से कम नहीं है ।

बंगाल का इस्लामीकरण

1400 ई0 में बंगाल में राजा गणेश सिंहासनारूढ़ थे । इस हिन्दू राज्य में मुस्लिम उलेमा और सूफी (हिन्दुओं के धर्मान्तरण और इस्लाम के प्रचार द्वारा) अनेक समस्याएं उत्पन्न कर रहे थे । राजा गणेश को इन सूफियों की राजनीतिक शक्ति का कोई आभास नहीं था । उसने इन लोगों का दमन करने की ठानी ।

कुतबुल आलम शेख नूरुल हम नामी सूफी ने सुल्तान इब्राहीम शरकी को पत्र लिखा कि वह आकर बंगाल के मुसलमानों की रक्षा करे । स्पष्ट है कि सूफियों ने वहाँ सुल्तान के पक्ष में काफी कुछ तैयारिँया कर ली होंगी । सुल्तान इब्राहीम ने इस पत्र की प्राप्ति पर बंगाल के विरुद्ध युद्ध की शुरुवात कर दी । राजा गणेश ने इस अनपेक्षित युद्ध में अपनी स्थिति कमजोर समझ कर उसी शेख नूरुल हक से जिससे वह पीछा छुड़ाना चाहता था सहायता की अपील की । शेख ने कहा कि वह उसकी सहायता तभी कर सकता है जब राजा इस्लाम स्वीकार कर ले । राजा तो तैयार हो गया परन्तु रानी के विरोध के कारण समझौता इस बात पर हुआ कि राजा सिंहासन अपने पुत्र जदु को सौंप दे और पुत्र इस्लाम स्वीार कर ले । तद्नुसार जदु (जलालुद्दीन मौहम्मद बनकर) सिंहासन पर बैठा । सुल्तान इब्राहीम ने अपनी सेनाएं वापिस बुला लीं । **इस घटना से ही सूफियों की शक्ति और भारत के इस्लामीकरण के कार्य में तत्कालीन मुस्लिम सुल्तानों से उनके तालमेल का ज्ञान हो जाता है ।**

जलालुद्दीन मौहम्मद को तो शेखों और सूफियों के हाथ की कठपुतली की तरह रहना ही था । **उसने 1414 – 1431** के अपने 17 वर्ष के शासन में अपनी हिन्दू प्रजा का बड़े पैमाने पर बलात् धर्म परिवर्तन किया और बंगाल को मुसलमान बनाने में अपनी पूरी राज्य शक्ति लगाा दी ।

जो राजा इस्लाम ग्रहण कर लेते थे वे दूसरे हिन्दुओं के धर्मान्तरण मे बहुत रुचि लेते थे । इसका कारण यह था कि हिन्दू प्रजा धर्मान्तरित राजा को घृणा की दृष्टि से देखती थी राजा को विद्रोह और षड्यन्त्र का सदैव भय बना रहा था । प्रजा में जो लोग मुसलमान हो जाते थे मुस्लिम शासक के पक्ष में हो जाते थे । बंगाल के इस्लामीकरण में इस प्रकार के धर्मान्तरित राजाओं का बड़ा योगदान है । सुल्तान जलालुद्दीन (जदु) , काला पहाड़ , मुर्शिद अली खाँ , पीर अली और मौहम्मद मुसलमान होने से पहले ब्राह्मण थे । इसी प्रकार परसेनी के मुस्लिम राजा , राजा पुदित सिंह के वंशज हैं चटगाँव के असद खाँ , श्याम राय चौधरी के वंशज हैं । तिप्परा के परगना सरायन , मेमन सिंह , हैबतत नगरी और जंगम बाड़ी के दीवान परिवारों और दरभंगा के मफौली के पठान परिवारों के पूर्वज हिन्दू थे । इन लोगों ने भयानक रूप से हिन्दुओं का धर्मान्तरण किया ।

डॉ0 वाइज ने जलालुद्दीन सुल्तान के विषय में लिखा है । एक ही शर्त थी कुरान मृत्यु । बहुत से हिन्दू कामरूप और असम के जंगलों में भाग गए ।

उस समय इस्लाम से बचने का यही एक मार्ग था , घर बार छोड़कर घने जंगलों में रहने लगना । किन्तु क्या वे सदैव भय मुक्त हो जाते थे ? मुसलमान सुल्तान जुगलों में उनका पीछा नहीं छोड़ते थं जिस प्रकार जंगली पशुओं के शिकार में हाँका जाता है उसी प्रकार जंगल में एक भाग पर सैनिक चारों ओर से घेरा डाल देते थे । फिर वह घेरा धीरे धीरे छोटा होता जाता था । **उसमें जो भी स्त्री , पुरुष बच्चे पकड़े जाते थे व गुलाम**

बना लिए जाते थे । यदि विदेश में बेचने के लिए न भेजे गए तो अपने ही देश मे निम्न कोटि भंगी इत्यादि का काम करने को मजबूर किए जाते थें इस्लाम ग्रहण तो उनकों करना ही पड़ता था । इस प्रथा को कमरघा कहा जाता था ।

डा0 वाइज आगे लिखते हैं यह सम्भव है कि इस जलालुद्दीन सुल्तान ने अपने चौदह वहर्ष के शासन काल में जितने बंगाली हिन्दुओं को मुसलमान बना दिया उतने अगले 300 वर्ष में भी नहीं बने । बारबोस लिखता है कि 16 वीं शताब्दी मे बंगाल में मुसलमान होना इतनस लाभदायक था कि शासकों के कृपा पात्र बनने के लिए ब ड़ी ंख्या में हिन्दू प्रतिदिन मुसलमान हो रहे थे ।

स्पष्ट है कि यदि गणेश जैसा दृढ़ प्रतिज्ञ हिन्दू राजा सूफियों को सामना करने में असमर्थ रहा तो छोटे छोटे राजा और जमींदार उनकी कारगुजारियों को कैसे रोक सकते थे । फलस्वरूप भारत वर्ष एक विशाल शिकारगाह बन गया था । पहाँ शासक हथियार लेकर और सूफी उनकी सहायता के लिए धाम्रिक आवरण में चमत्कारों के नाम पर संगठित होकर हिन्दुओं का शिकार करने को उतर पड़े थे ।

छोटे छोटे राजा जमींदार और किसान यदि सुल्तान को खिराज (टैक्स) अथवा जिजिया देने में असमर्थ होते थे तो उन्हें सपरिवार मुसलमान हो जाना पड़ता था । यह प्रथा बंगाल में ही नहीं पूरे भारत मे ं प्रचलित थी क्योंकि गुजरात से बंगाल तक उसके अनेक उदाहरण मिलते हैं । मुस्लिम सुल्तानों और बादशाहों के यहाँ गुलामों के अतिरिक्त हिजड़ों की भी बहुत माँग थी उनका शाही हरम में भिन्न भिन्न पदों पर कार्य करने के लिए उपयोग किया जाता था । स्वयं सुल्तान की सुरक्ष्झझ के लिए हिजडों की एक सेना तैयार की जाती थी । बहुत कम उम्र के बच्चों को बधिया कर दिया जाता था । धीरे धीरे उन्हें अपने परिवार जन भूल जाते थें फिर उनको सैनिक शिक्षा दी जाती थी । घुड़सवारी सिखाई जाती थी और उनका मुख्य कर्त्तव्य सुल्तान की रक्षा करना होता था । इस प्रकार दासों और हिजड़ो को बंगाल से सहस्रों की संख्या में प्रतिवर्ष निर्यात किया जाता था ।

प्रचलित विश्वास के विपरीत कि ये सूफी हिन्दुओं के प्रति दयालु होते थे ये भी सुल्तानों की तरह उन हिन्दुओं प्रति जो धर्म परिवर्तन को तैयार नहीं होते थें अति क्रूर होते थे ।

शेख अब्दुल कद्दुस गंगोही (सहारनपुर उ.प्र.) चिश्तिया सिलसिले का सूफी था यह सिलसिला दूसरे सिलसिलों की अपेक्षा अधिक उदार समझा जाता हैा । इस सूफीने सुल्तान सिकन्दर लोदी , बाबर और हुमायूँ को अनेक पत्र लिखे । उसका आग्रह था कि शरियत (इस्लामी कानून) को सख्ती से लागू किया जाए और हिन्दुओं को भूमि टैक्स और अपमानजनक जिजिया टैक्स देने पर मजबूर कर दिया जाए । **बाबर को लिखे गए पत्र में उसने आग्रह किया : उलेमा और सूफियों को अधिक से अधिक संरक्षण और सहायता दी जाए । .... शरियत नियमों के** अनुसार उन पर सब प्रकार के अपमान और तिरस्कार लादे जाएं । वास्तव मं मुस्लिम काल में हिन्दुओं को इस्लाम में लाने के लिए जो अत्याचार और अन्यायपूर्ण तरीके अपनाए गए उनकी फेहरिस्त अंतहीन है ।

16 वीं और 18 वीं शताब्दी के बीच मुस्लिम शासकों और सूफियों के संगठित प्रयास द्वारा हिन्दुओं का बड़े पैमाने धर्मान्तरण किया गया । इसी के कारण अंततः पाकिस्तान बना ।

काश्मीर का इस्लामीकरण

दैनिक समाचार पत्रों में काश्मीर में चरार ए शरीफ नामक नन्द ऋषि नूरुद्दीन की दरगाह को आतंकवादियों द्वारा जला दिए जाने पर अनेक समाचार और लेख छपे , 10 – 11 मई 1995 की रात कश्मीर में चरार ए शरीफ दरगाह जल कर खाक हो गयी । भारतीय प्रेस ने अपनी आदत के अनुसार उसे सूफी संत नुरुद्दीन नूरानी की पवित्र दरगाह (इण्डिया टुडे) सिम्बल ऑफ सैक्यूलरिज्म , ऐ मोस्ट वैल्युएबिल सिम्बल ऑफ कल्चरल आइडैन्टिटी (फ्रन्ट लाइन) , एबोड ऑफ रिशीज (इकोनॉमिक टाइम्स) इत्यादि न जाने क्या क्या कह कर गौरव मण्डित किया । और अपनी घोर अनभिज्ञता लज्जाजनक प्रदर्शन भी ।

चरार ऐ शरीफ गए सर्वदलीय संसदीय प्रतिनिधि मण्डल की तरफ से जारी एक विज्ञप्ति मे कम्युन्स्टि नेता इन्द्रजीत गुप्ता ने वहाँ पहुँचकर इस महान सूफी संत को अपनी श्रद्धांजली अर्पित की जो साम्प्रदायिक एकता के प्रतीक रहे थे । (नवजीवन लखनउ) हे भगवान ! कैसी घोर अनभिज्ञता ! और वह भी देश के गौरव के प्रतीक संसद के सदस्यों में !

कुछ ही लोगों को कदाचित् यह ज्ञात होगा कि यह नुरुद्दीन कौन था ? यह कौन सी गंगा जमुनी , धर्म निरपेक्ष , सांस्कृतिक परम्परा की पहचान था । बीसवी शताब्दी के अन्तिम दशक में काश्मीर में फैले रक्तरंजित आतंकवाद में इन तथा कथित संत ऋषि और उनके अन्य सहयोगी सूफी सन्तों की क्या महत्तवपूर्ण भूमिका रही है ? बात अजीब सी लगती है **परन्तु सत्य यह है कि यदि इन तथाकथित मुस्लिम संतों , ऋषियों , सूफियों का कश्मर में पदार्पण न हुआ होता अथवा वहाँ के शासकों ने इन्हें संत और ऋषि समझ कर आश्रय न दिया होता तो आज कश्मीर विश्व का सर्वश्रेष्ठ पंथनिरपेक्ष शान्तिप्रिय देश हुआ होता । पृथ्वी पर साक्षात स्वर्ग ।**

कश्मीर के इस्लामीकरण मे हजाँएक ओर सिकन्दर बुत शिकन जैसे खूंखार सुल्तानों की भूमिका है वहीं दूसरी ओर सूफियों का जमघट है । जिन्होंने विविध प्रकार से सन्तों , योगियों महात्माओं के छद्म रूप में अपने शिष्यों और अनुयायियों का धर्म परिवर्तन कर ब्राह्मण कश्मीर को मुस्लिम कश्मीर बना दिया । सिकंदर बुतशिकन के (1389 – 1431) विषय में राजतरंगिणी बताती है सुल्तान अपने तमाम राजसी कर्त्तव्यों को भुलाकर दिन रात मूर्त्तियाँ तोड़ने का आन्नन्द उठाता रहता था । उसने मार्तण्ड , विष्णु , ईशान चक्रवर्ती और त्रिपुरेश्वर की मूर्तियाँ तोड़ डाली थीं । कोई भी वन , ग्राम , नगर अथवा महानगर ऐसा न था जहाँ तुरुष्क और उसके मंत्री सुहा ने देव मंदिर तोड़ने से छोड़ दिए हों ।

हिन्दुओं के लिए एक ही विकल्प था : इस्लाम अथवा मृत्यु । कुछ कश्मीरी ब्राह्मणों ने पहाड़ से कूद कर , आग में जल कर अथवा दूसरी प्रकार आत्महत्या कर ली । कुछ किसी प्रकार शासन द्वारा डाले गए घेरे को चकमा देकर देश से भागने में सफल हो गए । अधिकांश ने इस्लाम स्वीकार कर लिया । बहुत से तकियों अर्थात् दरगाहों में रहने लगे जिसका अर्थ था कि वे भोजन के लालच में मुसलमान हो गए । कहा जाता है कि सिकन्दर बुत शिकन के अत्याचारों के फलस्वरूप कश्मीर में कुल 11 ब्राह्मण परिवार शेष रह गए । उसके समकालीन जम्मू के हिन्दू राजा को तैमूर ने धौंस और भय द्वारा मुसलमान बना लिया ।

किन्तु हिन्दुओं के अस्तित्त्व को मिटाने के लिए सूफी लोग सिकन्दर बुत शिकन से कहीं अधिक प्रभावशाली और खतरनाक थे । सिकन्दर बुत शिकन के अत्याचार द्रष्टव्य थे । व सूफी मीठे विष थे जिनकों हिन्दू स्वयंमेव अमृत समझ कर पीते थे । उन अत्याचारों के भय से उच्च और मध्यम वर्ग के हिन्दू मुसलमान बनते थे । निम्न वर्ग के हिन्दू जिजिया और दूसरे आर्थिक दबाव तथा लोभ के कारण । परन्तु फल वही होता था जो सिकन्दर बुत शिकन को इष्ट था इसलाम में धर्मान्तरण । सिकन्दर बुत शिकन के डर से लोग भागते थे । पहाड़ से कूद कर आत्महत्या कर लेते थे कि कहीं वह उनका धर्म नष्ट न कर दे । सूफियों की ओर वे उसी प्रकार खिंचे चले जाते थे और खुशी से इस्लाम न में प्रविष्ट हो जाते थे , जो विद्रोह करते थें वे नष्ट कर दिए जाते थें ।

ब्राह्मण बाहुल्य कश्मीर के इस्लामीकरण में जिन सूफियों का विशेष योगदान रहा उनमें एक शीर्षस्थ सूफी यही शेखनूरुद्दीन था जिसकी दरगाह चरार ऐ शरीफ मुस्लिम आतंकवादियों द्वारा जलाए जाने पर चर्चा का विषय बन गयी । इसका जन्म 9 अप्रैल 1370 ई0 को हुआ बताया जाता है ।

शेख नूरुद्दीन की सूफी मत में दीक्षा सययद अली हमदानी ने दी अथवा उसके किसी खलीफा ने इस पर कुछ मतभेद हैं । किन्तु इसमें सन्देह नहीं कि वह सययद अली हमदानी की परम्परा में ही पला । इसलिए शेख नूरुद्दीन के व्यक्तित्त्व का वास्तविक परिचय पाने के लिए उसके पीर सययद हमदानी के चरित्र को जानना आवश्यक है ।

1089 में महाराज हर्ष के राज्य काल से ही अनेक किराए के मुस्लिम सैनिक और मुस्लिम व्यापार कश्मीर में आकर बसने लगे थे । इसी प्रकार के सैनिकों में एक शाह मीर था जो 1313 ई0 में वहाँ पहुँचा , 1320 ई0 के लगभग मंगोल सरदार जुलकद्र खाँने कश्मीर पर आक्रमण कर वहाँ बड़ी तबाही मचायी । लुटे पिटे कश्मीर पर लद्दाख के एक बौद्ध रिनछाना ने वहाँ के हिन्दू राजा को हटाकर अपनी सत्ता स्थापित कर ली । किन्तु कश्मीर की ब्राह्मण प्रजा उसके बौद्ध होने के कारण लगातार विद्रोहरत रहती थी । शाहमीर के समझाने पर इस स्थिति से निपटने के लिए बौद्ध रिनछाना ने इस्लाम स्वीकार कर लिया । रिनछाना ने शाहमीर को अपना प्रधानमंत्री नियुक्त कर दिया । मध्य एशिया और ईरान मुस्लिम हो चुका था । रिनछाना का धर्मपरिवर्तन करने वाले सूफी का नाम था सययद शफुद्दीन सुहरावर्दी जो तुर्किस्तान के शेख शिहाबुद्दीन का शिष्य था । रिनछाना का मुस्लिम नाम था सदरुद्दीन । शेख को कश्मीर में बुलबुल शाह के नाम से जाना जाता है । रिनछाना ने धर्म परिवर्तन के बाद इन सूफियों को काफी जमीनें दीं , जिन पर उन्होंने खानकाह स्थापित किए और हिन्दुओं के धर्म परिवर्तन को नई शक्ति मिली ।

काफी राजनीतिक उथल पुथल के बाद शाहमीर 1339 ई में कश्मीर की गद्दी पर बैठा । गद्दी प्राप्त करने के लिए ब्राह्मणों का सहयोग आवश्यक था । **उस सहयोग को प्राप्त करने के लिए उसने अपनी पुत्रियाँ ब्राह्मण सरदारों को ब्याह दीं । उससे ब्राह्मणों का विरोध भी समाप्त हो गया और अन्ततः वे भी मुसलमान हो गए , क्योंकि मुसलमान लड़कियों से विवाह करने वाले लोग पारम्परिक हिन्दू समाज में नहीं रह सकते थे ।**

1420 – 70 में भी कश्मीर के सययद मख्दूम जहांनियाँ के शिष्यों द्वारा सुहरावर्दी सूफियों को बहुत बढ़ावा मिला । इसी समय में किरमान का सययद अहमद कश्मीर में आकर बसा । मख्दूम जहांनियाँ की परम्परा के एक सूफी सययद जमालुद्दीन ने कश्मीर में आकर धर्मान्तरण किए । वह केवल 6 महीने कश्मीर में रही और फिर अपने योग्य शिष्य शेख हमजा पर कार्य भार छोड़कर दिल्ली चला गया ।

किन्तु चौदहवीं शताब्दी के अन्तिम दिनों में कश्मीर में मीर सययद अली हमदानी (नंद ऋषि नूरुद्दीन के गुरु) ने जो परम्परा कश्मीर में डाली उसने कश्मीर का नक्शा ही बदल दिया । भारत मे आने से पहले इन्होंने अपने एक अनुयायी सययद ताजुद्दीन को कश्मीर भेजा । सययद ताजुद्दीन को कश्मीर के समय उस समय के सुल्तान शिहाबुद्दीन (1345 – 73) द्वारा खानकाह बनाने के लिए भूमि और धन इत्यादि अनेक सुविधाएं दी गयी । **श्री नगर के उत्तर पश्चिम दिशा में वहाँ से 9 मील के फासले पर शिहाबुद्दीन पुरा में इस खानकाह की नींव पड़ी ।**

अपने शिष्य से कश्मीर की राजनीतिक और धार्मिक स्थिति की रिपोर्ट प्राप्त होने पर सययद अली हमदानी भी अपने 700 शिष्यों के साथ 1381 ई0 में कश्मीर में आकर बस गए । उस समय सुल्तान कुतुबुद्दीन का शासन था ।

सययद अली हमदानी , अलाउद्दौला के सिमनानी उत्साह से जो उसके पीर शेख शरफुद्दीन के पीर थे , भयानक रूप से प्रभावित था । उसके और उसके शिष्यों के इस असीम उत्साह की परिणति मंदिर ध्वस्त करने और कश्मीरी हिन्दुओं का बलात् धर्म परिवर्तन करने में हुई ।

कश्मीर पहुँचने पर सैयद अली हमदानी ने श्रीनगर के काली मन्दिर के ब्राह्मण पुजारी का पहला धर्मान्तरण किया । हमदानी की प्रेरणा से सुल्तान द्वारा काली मन्दिर को तोड़कर वहाँ हमदानी का खानकाह स्थापित किया गया । हमदानी ने कश्मीर का विस्तृत दौरा किया और लगभग बीस ईरानी सूफियों को जिन्हें वह अपने साथ लाया था विभिन्न स्थानों पर स्थापित किया । इन सभी ने इन स्थानों पर खानकाह ओर लंगर (मुफ्त भोजनालय) बनाए जिन्हें मुस्लिम शासन ने सब प्रकार की सहायता दी । हमदानी के अनेक कश्मीरी शिष्यों ने अपनी अपनी खानकाहें बनाईं और पूरे कश्मीर को धर्मान्तरण केन्द्रों से पाट दिया । ये सूफी लोग जहाँ अपने चमत्कार (बाजीगरी) से अंधविश्वासी भोले भाले हिन्दू और बौद्ध कश्मीरियों का धर्माण्तरण करते थे , वहीं शासन की छिपी अथवा खुली सहायता द्वारा मन्दिरों को ध्वस्त कर उन पर खानकाह और मस्जिदें निर्माण करना उनका मुख्य कार्य था और इस कार्य में वह अत्यन्त रुचि लेते थे ।

हमदानी तीन वर्ष कश्मीर में रहा । उसके बाद हज के लिए जाते हुए मार्ग में उसकी मृत्यु हो गयी । मध्य एशिया में उसको दफन कर दिया गया । **इन्हीं सययद अली हमदानी की परम्परा में शेखनूरुद्दीन (ऋषि नन्द) पला और बड़ा हुआ ।** जिस समय शेख नूरुद्दीन कश्मीर के इस्लामीकरण की सोच रहे थे उस समय कश्मीर में एक शिव उपासक योगिनी लाला दीदी का बहुत नाम था । उसे लोग प्यार से लाला देद कहते थे । लाल देद की कविताएं घर घर में गायी जाती थी । कश्मीरी जनता में उनका अपूर्व सम्मान था ।

हमदानी के तीन वर्षीय मन्दिर ध्वस्त करो अभ्यिान से कश्मीरी ब्राह्मण बहुल समाज में सूफियों के प्रति रोष व्याप्त हो गया था । शेख नूरुद्दीन ने कश्मीर के इस्लामीकरण का दूसरा मार्ग पकड़ा । उसने लाल देद की सार्वजनिक प्रतिष्ठा और जनता द्वारा अपूर्व प्रम को देखकर उसकी परम्परा में इस्लाम के धर्मान्तरण प्रोग्राम पर हिन्दू दर्शन का रंग चढ़ाकर प्रचार प्रारम्भ किया । शीघ्र ही लाला देवी के भक्त उसको भी उसी आदर की दृष्टि से देखने लगे । फिर प्रारम्भ हुआ **वही धर्मान्तरण का सिलसिला जो प्रत्येक सूफी का वास्तविक प्रिय और एक मात्र ध्येय होता है ।** उन्होंने अनेक हिन्दुओं का धर्मान्तरण कर उन्हें शिष्य बनाकर अपने दूसरे सहधर्मियों के साथ धर्मान्तरण में लगा दिया । उसके मुख्य शिष्यों में बामुद्दीन , जैनुद्दीन , लतीफुद्दीन का नाम आता है । ये सभी जन्म से ब्राह्मण थे ।

ध्यान देने योग्य बात यह है कि **किसी भी हिन्दू सन्त ने चाहे वह गुरु नानक हों या लाल देवी अपने किसी भी मुस्लिम भक्त का धर्मान्तरण नहीं किया परन्तु इन तथा कथित धर्म निरपेक्ष महान सूफी सन्तों ने अपनें हिन्दू भक्तों का सदैव ही इस्लाम में धर्मान्तरण किया ।**

इन्द्रजीत गुप्ता जैसे भारतीय कम्युनिस्टों को तो सोवियत संघ जैसे शक्तिशाली राष्ट्र को छिन्न भिन्न करने में सूफियों की भूमिका का ज्ञान होना चाहिए । जब कम्युनिस्ट दमन के कारण रूस के मुसलमानों ने सत्ता के सम्मुख समर्पण कर दिया , काकेशस के आस पास मुस्लिम बहुल राज्यों में विभिन्न परम्पराओं के सूफियों ने संगठित होकर वहाँ प्रकटतः उसी प्रकार का , देखने में अराजनीतिक धार्मिक आन्दोलन प्रारम्भ किया जैसा कि कश्मीर के सन्दर्भ में हम ऊपर बता आए हैं ।

अलैक्जैन्डर बेनिंगसेन , जो सोवियत इस्लाम के विशेषज्ञ माने जाते हैं , कहते हैं कि इस प्रकार के संगठन और आन्दोलन उस समय के लिए उपयुक्त होते हैं जब इस्लाम काफिरों के विरुद्ध एक नया युद्ध लड़ने के लिए अपनी शक्ति संगठित कर रहा होता है । सूफियों ने इस्लाम के अतिरूढ़िवादी जिहादी रूप को बढ़ावा दिया । अन्ततः मुसलमानों में मजहबी जुनून उत्पन्न कर कम्युनिस्टों का सफाया करने में सफल हो गए । (प्रा0 डैनियल पाइप्स : इन द पाथ ऑफ गॉड) नूरुद्दीन के शिष्यों ने अपने को धर्मनिरपेक्ष संत के रूप में पेश करने के लिए सूफी के स्थान पर अपने को ऋषि कहना प्रारम्भ किया क्योंकि साधारण हिन्दू जनता ऋषि मुनियों को साधारण महात्माओं और योगियों से भी श्रेष्ठ समझती है । पुराने ऋषि मुनियों के बारे में कहा जाता है कि वे बाघ की धारी दार खाल (बाघाम्बर) ही ओढ़ते बिछाते थे । इन नकली ऋषियों ने भी काली सेफेद धारियों के ऊनी कपड़े पहनना शुरू कर दिया । **अपने असली ध्येय को छिपाने के लिए इन्होंने घाटी में फलों के पेड़ लगाने जैसा लोकहित कार्य भी किया जैया ईसाई मिशनरी अस्पताल चला कर करते हैं ।** हिन्दू ब्रह्मचारियों की परम्परा में ये लोग मांस नहीं खाते थे तथा शादी नहीं करते थे । इसप्रकार हिन्दुओं पर अपनी आध्यात्मिक धाक जमाए रखते थे । इनके हिन्दू अनुयायी इस्लाम ग्रहण करते तो तुरन्त उन्हें दूसरे हिन्दुओं को मुसलमान बनाने के कार्य में लगा दिया जाता था । वे अपने खानकाह स्थापित कर लेते थे । इनकी उपयोगिता को देखते हुए मुस्लिम मिशनरी गिरी पड़ी खस्ता कब्रों को पक्का स्वरूप देकर उसे पीर, गाजी अथवा शहीद फलाँ फलाँ की मजार मशहूर कर देते हैं । उनकी चमत्कारी शक्तियों का प्रचार होने लगता है। अज्ञानी और अन्धविश्वासी हिन्दुओं की भीड़ मन्नत मांगने के लिए उमड़ने लगती है । अन्धविश्वास के कारण महिलाओं के यौन शोषण की कहानियाँ भी यदा कदा समचार पत्रों में छपती रहती हैं । **स्वतंत्रता के पश्चात इस प्रकार की सहस्रों नई मजारों पर मेले लगने लगते हैं ।**

धर्मान्तरण, धर्मान्तरण, धर्मान्तरण

सययद आदम बन्नौरी (1543 ई0) के ,ससपकसह में 1000 व्यक्ति हर समय ठहरे रहते थे । तजकरे आदमियाँ के अनुसार वह जहाँ भी जाते थे उनके साथ उलेमा और दूसरे लोगों की भीड़ भी जाती थी , 1642 ई0 में जब वह लाहौर आए उनके साथ 10000 लोग थे । उनकी लोकप्रियता देखकर शाहजहाँ भी भयभीत हो गया । उसने बड़ी धनराशि देकरउन्हें भारत से बाहर हज्ज के लिए भेज दिया और इस प्रकार उस शेख से पीछा छुड़ाया ।

तजकरे आदमियाँ और दूसरे सूफी ग्रन्थों में सूफियों के पास अनन्त धनराशि का स्पष्टीकरण करने के लिए उनकी चमत्कारिक शक्तियों का वर्णन किया गया है । उनका इतना राजनीतिक प्रभाव था कि दिल्ली के सम्राट भी उनसे भय खाने लगते थे । अविश्वसनीस चमत्कारी ढकोसलों को दृष्टि से दूर रख कर हम यह सोचने को मजबूर हाते है। कि यह धन आता कहाँ से था ? धन से सभी वस्तुएं प्राप्त हो जाती हैः शिष्य , लोकप्रियता , हथियार , सेना इत्यादि और राजनीतिक प्रभाव । इस दृष्टि से देखने पर यह स्पष्ट हो जाता है कि आज की भाँति ही यह धन लेने वाले चाहे सूफी हों या दूसरे लोग सभी दिल्ली के सम्राट के संदेह के दायरे में आते थे क्योंकि कुछ सीमान्त मुस्लिम देश भी मुगल साम्राज्य के सीमान्त प्रान्तों पर सदैव गिद्ध की दृष्टि लगाए रहते थे ।

शाहजहाँ स्वयं हिन्दुओं के धर्मान्तरण में बहुत रुचि लेता था । फिर शाहजहाँ का शेख की धर्मान्तरण गतिविधि और ख्याति से डरने का उपर्युक्त कारण ही हो सकता है । इस्लाम का प्रसार तो ठीक था , परन्तु सीमान्त शत्रु देशों से धन का प्रवेश वांछनीय नहीं था ।

ख्वाजा मौहम्मद मासूम (. 1668) के 9,00,000 (नौ लाख) शिष्य थे जिनमें से 7,000 उसके खलीफा बने अर्थात् जिन्होंने उनकी परम्परा में धर्म प्रचार और धर्म प्रसार के नाम पर असंख्य हिन्दुओं को मुसलमान बनाया । सर सययद '' अंसाल उल सनादीद '' में लिखते है। कि उनके यहाँ 500 व्यक्ति प्रतिदिन भोजन करते थे । इसी बात से इन सूफी की आय का अन्दाजा लगाया जा सकता है ।

19 वीं शताब्दी के मशहूर इसलामी प्रचारक और सिखों और अंग्रेजों के विरुद्ध सशस्त्र जेहाद करने वाले सययद अहमद शहीद के कारनामे तो कल्पनातीन लगते हैं लखनऊ के विश्व विख्यात मदरसे के भूपूर्व सर्वे सर्वा अी मियाँ के नाम से ख्यात सययद अबुल हसन अली नदवी लिखते हैं कि : '' जब सययद अहमद शहीद हज यात्रा के लिए कलकत्ता जा रहे थे तो मार्ग में पड़ने वाले ग्रामों में शायद ही कोई व्यक्ति बचा हो जिसने उनसे दीक्षा न ली हो (उनके हाथों मुसलमान न बना हो) । इलाहाबाद , मिर्जापुर , बनारस , गाजीपुर , पटना और कलकत्ता में तो विशेष तौर पर ऐसे लोगों की संख्या लाखों में होगी । बनारस में सदर अस्पताल के रोगियों ने उनन्हें समाचार भिजवाया कि वह उनके पास आने में असमर्थ हैं इसलिए बड़ी कृपा होगी यदि सययद साहब स्व्यं अस्पताल आकर उन्हें दीक्षा दे दें ।

कलकत्ता में उनका निवास दोमास रहा और लगभग 1000 व्यक्ति प्रतिदिन उनसे दीक्षा लेते रहे । दीक्षा के कार्यक्रम जब समय की तंगी मालूम होने लगी तो यह उपाय किया गया कि एक बड़े मकान में लोगों को जमा किया जाता था । फिर सात लम्बी चौड़ी पगड़ी धरती पर बिछा दी जाती थी । लोग उन पगड़ियों के सिरों को पकड़ लेते थे । **फिर सययद साहब उस पगड़ी के एक सिरे को पकड़कर उनसे कलमा पढ़वा लेते थें** । इसके पश्चात यही क्रम दूसरी पगड़ियों पर बारी बारी से चलता रहता था। अनुमान लगाया जा सकता है कि हिन्दू संख्या का कितना बड़ा भाग एक सूफी सन्त द्वारा मुसलमान बनाया गया । कलमा पढ़वाना निश्चय ही मुसलमान बनाना है।

सययद अथर अब्बास बहराइच के शहीद सलार मसूद गाजी की दरगाह के विषय में आश्चर्य प्रकट करते हुए लिखते हैं कि उसकी मजार पर जाकर उसकी पूजा करने वाले लाखों हिन्दुओं के लिए यह बिल्कुल महत्तवपूर्ण नहीं है कि उसने उनके कितने पूर्वजों का (इस्लाम स्वीकार न करने पर) वध किया था ।

योग्य हैं

हिन्दू समान तुम वास्तव में धन्य हो जिनका ध्येय ही तुमको जड़मूल से मिटाना था और धन्य हैं हिन्दू समान के वे लाखों साधु संन्यासी , जगद्गुरू , भगवान , सद्गुरू और राजनीतिक नेता जो इन अनभिज्ञ लोगों को इस प्रकार की पूजा से विरत करने का कोई प्रयास नहीं करते ं उल्टे उन्हें समझाते रहते है कि सभी धर्म समान हैं । सूफी संत भी हिन्दू संतों ऋषियों के समान ही ईश्वर भक्त है। ऐसे समाज के नष्ट हो जाने में क्या सन्देह हो सकता है ?

अपूज्याः यत्र पूज्यन्ते पूज्यानाम् च निरादरः ।
त्रीणि तत्र प्रविशन्ति , दुर्भिक्षं , मरणं भयम् ।।

जो उनकी पूजा करते है। जो पूजा के योग्य नहीं हैं और उनका निरादर करते हें जो पूजा के योग्य है। उनका तो अभाव और भयग्रस्त होना और मरना निश्चिय ही है ।

पुस्तक के विषयमें

भारत वासी होने के नाते हम प्रायः अपनी शैशवास्था से अध्यापक गण के माध्यम से , इतिहास और पूर्वजों के मुख से भारत वर्ष में इस्लाम के सैनिकों द्वारा आक्रमण , मारकाट , लूटपाट के बारे में मौखिक रूप से जानते आ रहे हैं। । इस पुस्तक में ऐतिहासिक तथ्य व पुस्तको से पुमाण सहित दी गयी जानकारियाँ हृद्‌य विदारक हैं लेखक ने जो तथ्य दिए है वे सभी मानव जाति के लिए विशेष जानकारियों से भरे हुए हैं । आशा है कि सभी मानव जाति के लिए पाठक इन कुकृत्यों को जानने का प्रयास करेंगे तथा स्वयं ही यह जानेंगे कि यद्यपि कोई भी धर्म , हिंसा, मारकाट, लूटपाट और अन्य धर्मों की स्त्रियों का अपमान करना नहीं सिखात फिर भी मजहबी जनून में अन्धें होकर कुछ लोग किस प्रकार पाश्विक वृत्ति पर आ जाते हैं । इस सब बातों को जानकर मानना ही होगा कि हिन्दू धर्म वास्तव में ही सत्य, सबके प्रति समान भाव और दूसरों का सम्मान करना सिखाता है ।

– **चन्द्रसेन**